विश्वास

एक आशा जो कभी नहीं टूटती

नंदकिशोर चौधरी

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Nandkishor Chaudhary 2025

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7139-792-6

Cover Design: Shubham Verma
Typesetting: Sagar

First Edition: October 2025

एक विश्वास जो कभी नहीं टूट सकती थी।

महादेवगढ़ दो नदियों के बीच एक सुंदर सा प्यारा सा गांव जिसमें कई घने वृक्ष और उन पर कई प्रकार की चिड़िया चह-चहा रही होती हैं। खेतों की बालियां लहरा रही होती है खेतों की पगडंडियों पर से एक साइकिल सरपट भाग रही होती है। जो साइकिल चालक था।उसके पीठ पर एक बस्ता होता है। और साइकिल के पीछे गाय का चारा बंधा हुआ होता है।

महादेवगढ़ खूबसूरत सा गांव था। वह लड़का उन खूबसूरत रास्तों से होता हुआ साइकिल को अपने घर में लेकर आता है। और गायों को चारा देने के बाद वह अपनी मां के पास जाता है।

वह लड़का जरा सा डरा हुआ था। दोनों हाथ को अपनी पीठ के पीछे बांधते हुए अपनी मां से कहता है। क्या मां मैं खाना खा सकता हूं! अब।

मां उसकी ओर देखती हैं। वह अपनी छोटी सी बेटी को लाढ प्यार कर रही होती हैं। वह खाना खाने की मंझुरी सिर हिला कर दे देती है।

वह लड़का खाना लेकर अपने तबेले में जाता है।

मां! ओ मां! देख में तेरे लिए भी खाना लिया आया हूं। अब खाना खा ले अब रात को हम बात करेंगे।

जहां हमें पता चलता है कि वह लड़का जिसका नाम गणेश होता है।उसकी दो मां होती है। कारण यह था कि जो गणेश का जो अपना बाप था वह दूसरी शादी कर लेता है गणेश की अपनी मां की तबीयत को देखते हुए। मगर किसी अकस्मात गणेश के अपने पिता के भी मृत्यु हो जाती है। तो गणेश की सौतेली मां भी दूसरी शादी कर लेती है। जिससे उसे एक बेटी उत्पन्न होती है।

गणेश की यह माँ (अपनी)काफी बीमार सी रहती है। वह दिमागी हालत पर भी कमजोर है। गणेश अपने नित्य काम को करने के बाद एक कॉपी व कलम लेता है और कुछ लिखने लगता है बेशक लिखता चला जाता है।

गणेश के स्कूल में।

गणेश जिस स्कूल में पढ़ता है। वहाँ स्कूल में अध्यापकों का समूह आपस में किसी गहन विचार को कर रहे होते हैं।

एक अध्यापक साहब खड़े होते हैं। और प्रधानाचार्य महोदय से बोलते हैं।

महोदय आप मेरे तबादले के पत्र पर हस्ताक्षर कर मेरा तबादला यहां से कर दें। यह गांव मेरे लायक बिल्कुल भी नहीं है।यहां मुझे कुछ भी अपनापन सा नहीं लग रहा है। मैं जिस तरह का अध्यापक हूं। यहां पर उस तरह के छात्र की बहुत कमी है।

वह अध्यापक बात करते-करते खिड़की के बहार देखता है।

खिड़की में देखता है। कि गणेश किसी लड़की को कोई कागज उसे भेंट स्वरूप दे रहा होता है।

अध्यापक फिर बोलता है।

यह गांव के बच्चे शादी विवाह से आगे का नहीं सोचते हैं। कल इन्हें जाकर शहर में किसी के घर में भी काम ही करना होगा। प्रधानाचार्य साहब आप मेरे पर मेहरबानी कर मेरे तबादले की मंजूरी को स्वीकार करें।

यह सब बात करते हुए अध्यापक वहां से चला जाता है।

समय के तीसरे पहर में वह अध्यापक एक कक्षा में बच्चों को पढ़ा रहा होता है। उसकी नजर गणेश पर जाती है। और वह उसे खड़ा कर देता है।

गणेश अध्यापक से पूछता हैं

क्या सर आप मुझे बता सकते हैं मेरी क्या गलती है जो आप मुझे भरी कक्षा में खड़ा कर चुके हैं।

फिर अध्यापक इशारे से उसे लड़की को बुलाता है जिसे गणेश ने भेंट स्वरूप वह कागज दिए थे। अभी भी उसके हाथों में वही कागज होते हैं।

अध्यापक जबरदस्ती करके उन कागज़ों को छीन लेता है।

और अपने बैग में भर लेता है।

फिर गणेश आवाज उठाता है। सर वह मेरे मुख्य कागज है। कृपया करके मुझे वापस देने का कष्ट करें।

हम भी देखते हैं तुम कागज में किस प्रकार के नोट्स बनाते हो। यह कहकर वह अध्यापक वहां से चला जाता है।

गणेश राधा पर बहुत क्रोधित हो जाता है।

मैंने बोला था ना उस कागज को घर पर जाकर पढ़ना जो खामियां तुम्हें दिख रही हैं। उन्हें सुधार करना। अध्यापक कुछ पेपर को लेकर चला गया है अब न जाने क्या होगा।

वह लड़की मायूष हो जाती है वहू उसके आंखों के पलकों की नीचे धारा से बन जाती है।

गणेश को फिर दया आ जाती है।

अरे राधा कोई चिंता की बात नहीं है। कुछ गलत तो था नहीं उसमें जो भी था उसे हम द्वारा लिख सकते हैं।

गणेश का घर

गणेश के सौतेला पिता और गणेश के बीच में आपसी कई मतभेद होते थे,

जैसे गणेश के पिता का कहना था! कि। पूरे घर को मैं ही काम के खिला रहा हूं।। उपर से

एक यह गाय वह मेरे सिर के लिए बड़ी आफत हैँ।

गणेश अपने पिता से समझाते हुए कहता है।

मैं, मेरी मां, और मेरी गाय, आपके कमाये हूए रुपए का एक पैसा भी नहीं जानते हैं। अपना पेट खुद व खुद भर रहे हैं।

ये जो पैसे का उलाहना किसी और को दे! हमें ना दे

स्कूल में।

वह अध्यापक जिसने कल राधा के हाथ से वह कागज लिए थे वह राधा के पास आकर पूछता है।

राधा यह गधा कहां है?

राधा सर घुमाकर इधर-उधर देखती हैं। और सर से कहती सर मुझे नहीं पता यह कहां है। और यह कब तक में आएगा।

अध्यापक रविकांत राधा पूछते हैं।

राधा फिर वही जवाब देती है। सर अगर गणेश कुछ अच्छा लिखता है। तभी स्कूल में आता है मेरे पास वरना नहीं आता है। इसे सर जी बहुत तरह की परेशानी है इसकी मां दिमागी हालत कमजोर है इसकी सौतेली मां भी है और सौतेला बाप भी हैं।

रविकांत राधा से कहता है।

क्या? गणेश ने ऐसी और भी बहुत कुछ लिख चूका है।

सर बहुत कुछ! बहुत ही ज्यादा कुछ! लिख रखा है। पूरा एक बक्सा भर रखा है।

रविकांत को परेशान देखते हुए।

राधा एक अपने मित्र सुदामा के पास जाती है।

और सुदामा को कुछ कहती है सुदामा अपना बस्ता बंद करता है। साइकिल लेता है और सरपट भागता है। सुदामा गणेश के पास जाता है। गणेश एक सब्जी मंडी में एक रेहडी पर काम कर रहा होता है। सुदामा उसके पास जाता है और कहता है।

गणेश भाई! गणेश भाई! राधा को चोट लग गई है। वह तुम्हें बुला रही है।

गणेश थोड़ा परेशान होता है। जिसके पास वह काम कर रहा होता है उसे छुट्टी मांग कर स्कूल की ओर जाता है। सुदामा और गणेश दोनों एक ही साइकिल पर जा रहे होते हैं।

रविकांत एक कक्षा में उसे कागज को जिसे गणेश ने लिखा था। माथे पर हाथ रखकर गहन चिंतन से उसे ध्यान से पढ़ रहा होता है।

राधा बहार से आवाज लगती है।

सर गणेश आ गया है आपको उससे मिलना था ना?

हां! हां! कहां है वह? अंदर बुलाओ उसे।

रविकांत उसकी हालत देखकर उसे पर हंसता है। और कहता है।

यह क्या हालत बना रखी है तुमने अपनी। तुमसे ज्यादा सुंदर तो गधा दिखता है।

सुदामा पीछे से कहता है। सर गधा ही तो है। आलू के बोरे माथे पर उठा रहा था मैं इसे पकड़ के लाया हूं।

रवि कांत सुदामा से कहता है।

सुदामा ऐसे लोगों को रहा दिखाओ। Good!

गणेश के पास आता है।

गणेश बच्चे यह क्या लिखा है। आपने। मैं जब यह पेपर आपसे छीना था मुझे लगा यह कुछ और है। मगर यह तो कुछ और ही है। ऐसी रचना तो मैं आज तक कभी नहीं देखी है। ऋषि मुनि ही इस प्रकार की रचना कर पा रहे थे। जी सच में तुमने लिखा है।

गणेश कहता है। हां जी सर

रवि कांत गणेश और राधा से कहते हैं। अगर बेटा मैं जहां रहता ना तो तुम्हें बहुत अच्छा मंच देता है। मेरी गलतियों के कारण मैं तुम्हें उसे मंच अभी नहीं पहुंच पाउंगा। क्योंकि मैं तबादला ले लिया है। इस प्रकार की रचना को दुनिया की जरूरत है।

प्यार का असली मतलब इस रचना में मुझे पता चला।

बेटी राधा। मैं अब इस जगह जा रहा हूं (एक कागज का टुकड़ा देते हुए) जब तुम्हारी क्लासें खत्म हो जाए कृपया करके मेरे पास सारी रचनाओं को लेकर आना। मैं इन रचनाओं को कुछ लोगों को दिखाऊंगा। मैं एक शिक्षक के नाते इस दुनिया को ज्ञान दिखाऊंगा तुम्हारे जरिये।

राधा बीच में रवि कांत को टोकती है। और कहती है।

सर! आपसे आज हम विदा हो जायेंगे।

अभी आप ने हमें जाना ही नहीं हैं। तो आप हमें भूल सकते हैं। हम आपको याद रहे। इसके लिए आप गणेश कि एक रचना को पूरी तरह से सुन ले।

तो आपको कुछ याद रहेंगे हम।

ऐसा भी कुछ है क्या? रवि कांत गणेश से पूछता है।

राधा रवि कांत से कहती है। सर यह तो गधा है। इसे कुछ भी पता नहीं है। तो मैने इस कहानी लिखने सिखाई है।

एक कहानी सब सुनकर जो आज।

गणेश एक जगह शांति से बैठता है उसके सामने सुदामा राधा और रवि कांत बैठते हैं। और गणेश अपनी कहानी सुनाना आरंभ करता है।

रचना 1

अब हम गांव से दूर एक शहर की ओर आते हैं। यह शहर काफ़ी भिड़ होती हे गाड़ी की ध्वनि की सुनाई देती थी लिए। शहर थोड़ा आधुनिक करण के पीछे भाग रही होती।

इसी शहर में एक स्कूल होता है। स्कूल में अभी नये-नये प्रवेश आरंभ हो चुका था। बहुत कुछ पुराने बच्चे भी क्लास में बैठे थे। अभी क्लास चालू नहीं होने वाली थी। सभी बच्चे आपस में ही बात कर रहे होते हैं।

एक लड़की उसका नाम तनु होता है वह सबसे ज्यादा ही बात रही होती है। क्योंकि वह पहले इस क्लास की मॉनिटर थी। और शायद आप भी वही मॉनिटर होगी।

वह लड़की अपनी सहेलियों से बातें करते हुए कहती है।

घमंड नहीं है! भरोसा है। मैं इतना मेहनत किया है। हर साल की तरह इस साल में मेरे ही नंबर आएंगे। हर साल कोई-कोई नया बंदा आता है। तभ पर भी मेरे बराबर नंबर किसी के नहीं होते हैं। अपनी मेहनत से भरोसा करने में क्या ही जाता है।

इस स्कूल का एक नियम होता है कि जिस बच्चों के ज्यादा नंबर आते हैं उसे हमेशा रोल नंबर एक दिया जाता है और जिसके कम आते हैं उसे पीछे की ओर बैठाया जाता है।

क्लास के नये इंचार्ज सहाब आते हैं।

रोल नंबर का चार्ट दीवार पर चिपकाते हैं और चले जाते हैं और कहते हैं कल से तुम लोगों की क्लास स्टार्ट होगी।

तनु झठ से उठती है। और अपना रोल नंबर चेक करने जाती है वह मायूष होकर पीछे आती है। सभी बच्चे अपना-अपना रोल नंबर देखते हैं जिस हिसाब से उनके एग्जाम में नंबर आए थे.

तनु का रोल नंबर दो आया हुआ था और उसकी सहेलियों का रोल नंबर 15 व 17 आया हुआ था।

तनु की एक सहेली दीपा होती है।

इस बार दूसरे स्थान पर है। और भी सब अपने अलग-अलग स्थान पर है मगर प्रथम स्थान पर कौन है। तनु फिर से जाती है और उसे लिस्ट में नाम चेक करती है।

जब वह नाम देखकर अपनी सहेली के पास आती है! और बताती है।

कोई रमन नाम का लड़का प्रथम स्थान पर है।

तनु की सहेलियों का अब हंसी नहीं रख रही होती है वह पेट पड़कर हंसने लगते हैं क्योंकि तनु का घमंड अब चूर-चूर हो चुका था

हंसते हुए वह मुंह पर हाथ रखकर तनु से पूछती है।

अब यह रमन कौन है? है

तनु खड़ी होती है और आवाज लगती है।

रमन! रमन !.. रमन कौन है।

इतनी क्लास के बीच में से कोई सुग भुघाहट या कोई बच्चा यह नहीं बोलता है कि मेरा नाम रमन है शायद रमन नहीं आया होगा यह सोचकर तनु बैठ जाती है।

लंच मे

तनु अपनी सहेलियों के बीच बैठकर खाना खा रही होती है।

अरे बहन! हमारे क्षेत्र में पढ़ाई होती है ना! हमारे स्कूल में पढ़ाई होती है। वह किसी और क्षेत्र किसी और स्कूल से आया है। तभी उसके नंबर ज्यादा है।

बाकी अगर देखा जाए इस स्कूल की हिसाब से तो सबसे ज्यादा नंबर तो मेरे ही है ना।

अब अंग्रेजी कक्षा का ही उदाहरण ले लो ना तो अंग्रेजी का अध्यापक हमारे पास है ना हम अंग्रेजी पढ़ पाते हैं! ढंग से?

अगर हमारा क्षेत्र अच्छा होता हमारे स्कूल अच्छा होता तो मैं नंबर भी ज्यादा ही होते ठीक है।

तनु भून्नाई हो ती है।तभी तनु के पीछे एक महिला शिक्षक आकर खड़ी होती है।

तनु इस साल तुम दूसरे स्थान पर आई हो। इतना जो तुम अंग्रेजी भाषा को लेकर कह रही हो ना इस साल एक अंग्रेजी के शिक्षक आए पड़े हैं वह बहुत बड़े-बड़े लोगों को भी अंग्रेजी सीखा चुके हैं अब तो तुम क्या चीज हो। लंच के बाद दूसरी क्लास उनकी ही लगेगी तुम्हारे पास।

दीपा महिला शिक्षक से पुछती है। मैं एक नंबर पे रमन है। वह लड़का है कौन?

मेरे पास तुम्हारी क्लास का लिस्ट है देखती हूं उसमें किसकी तस्वीर लगी पड़ी है।

महिला शिक्षक कई पन्ने पलटने के बाद उसे क्लास की लिस्ट में चेक करती है।

पहले नंबर पर आए लड़के रमन की फोटो सबको दिखाती है।

तनु की एक सहेली सपना कहती है।

अच्छा यह लड़का है ऐसे तो मैंने देखा है।

कौन है? कहां देखा है?। तनु उससे पूछती है।

अरे अपनी क्लास के पीछे जहां सूरज द गवारा बैठता है वहीं पर देखा है।

सूरज के पास बैठता है? इतना गवारा लड़का के पास जाता है?

उसे जल्द से जल्द हमारी टीम ज्वाइन करने बोलो।

अच्छे लोगों में रहेगा तो अच्छी बातें सीखेगा वरना आज एक नंबर है कल सबसे लास्ट में वही मिलेगा।

तनु वही नहीं रुकती है अपनी महिला शिक्षक से भी कहती है।

मैडम उनकी जीत से ज्यादा हमारे हार के चर्चे देख लो।

कक्षा मे अभी गणित का विषय चल रहा था। (darivation)

शिक्षक ने कुछ सवाल पूछ लिए।

कक्षा मे सवाल के जबाब देने को लेकर सन्नाटा बिखर चूका था। तनु कोशिश कर रही थी जबाब देने के लिए। तनु के माथे से पसीना वह हारने कि चिंता को साफ देखा जा सकता है। मगर कोई जबाब नहीं देता हैं।

पीछे एक लड़का खड़ा होता हैं। सभी उसे देख के हैरान थे। वो लड़का भी कांफ रहा था।जैसे आज पहली बार कुछ कहना चाहता हो!हकलाते हुए। वो जबाब दे देता हैं।

मास्टर ये उत्तर सुन के इतना खुश होता हैं। सभी हैरान थे सूरज द' गवार ने इतना सही जबाब कैसे दे दिया?

मास्टर फुले ना समा रहा था।

इतना सटीक । एक शिक्षक का हौंसला ऐसे लड़को से ही बढ़ता हैं। इससे नहीं की मे भांड हूँ। ओर तुम दर्दशक।

सभी बच्चों का सर झुक चूका था। ओर वो लोग हैरान भी थे।

शिक्षक सूरज को शाबाशी देते हुए चले जाते हैं।

सपना तनु से कहती हैं।

ये मास्टर पागल हैं?

दीपा भी सपना के हां! में हां! मिलाती हैं।

मगर सोचने वाली बात यह है सूरज द' गवार ने उत्तर कैसे दे लिया इतना सही। तनु कहती है।

फिर वह तीनों पीछे मुड़कर देखते हैं।

रमन सूरज को सवाल समझा रहा होता है।

अगली घंटी बजती है। इस घंटी के बाद एक अध्यापक का प्रवेश होता है। वह देखने में भी अंग्रेजी विषय का अध्यापक लग रहा था। सुंदर वह गठीला शरीर और बाल उलझे हुए एक अच्छे से राजकुमार की तरह। कक्षा में प्रवेश करने के दौरान वह पहले कक्षा के सभी बच्चों को निहारता है। कक्षा के सभी बच्चे भी उसे देखकर हँसते की इस प्रकार का भी कोई अध्यापक होता है। वरना उनके नज़रों में तो अध्यापकों की पहचान मे एक ही दृष्टि होती थी पेट निकले हुए होते थे। और माथे पर से बाल गायब होते थे।

वह बच्चों को हाथ मिलाकर पूछता है।

और बच्चों आप लोग कैसे हो?

सभी बच्चे एक स्वर में रहते हैं।

सर जी हम अच्छे हैं।

वह अध्यापक अपना पेट पकड़ के हंसने लगता है।

अरे बच्चों मुझे लगता है। तुम्हारे ऊपर मुझे बहुत मेहनत करनी पड़ेगी। क्योंकि तुम लोग भेड़ चाल चल रहे हो।

बच्चों मेरा नाम नरेश है नरेश कुमार।

मैं अंग्रेजी विषय का अध्यापक हूं।

तुम्हें समझाने वह पढ़ने के दौरान मुझे कोई भी गलतियां होती हैं। तो आप कृपया करके मुझे क्षमा कर दे।

बाकी मेरे बारे में यह है। कि मैं काफी बड़े लोगों और हस्तियों को अंग्रेजी सिखाई है। और इस बार मैं तुम्हें सिखाऊंगा। तो कोशिश करना कि तुम मेरा साथ दो और हम दोनों मिलकर एक दूसरे को सिखाएंगे।

अब उनकी अंग्रेजी की कक्षा आरंभ होती है। जान पहचान के बाद। जब नरेश पढ़ने लगता हैं। तब तनु किसी ना किसी बात पर परेशानी होती थी।वह ढंग से नही बेठ पा रही थी।नरेश तनु को इशारे से खड़े होने को कहते हैं।

जी सर?

आपका नाम क्या है ?

तनु ।

तनु जी आपको किस तरह की तकलीफ हैं?

सर कुछ तो नहीं! तनु कहती हैं।

नरेश तनु को देखना चाहता था। वो कैसी दिखती हैं।

शायद नरेश के कुछ ओर ही विचार थे तनु को लेकर ।

तुम कुछ करना चाहती हो। मुझे लगता हैं। तनु ।

अब तनु अपने आप को रोक नहीं पाती हैं।

अरे सर मुझे ना FASHION DESIGNER बनना हैं। सर मेरी ये. (तनु एक FILE निकलती हैं }

नरेश उसकी उस FILE को बड़े ध्यान से देखता हैं।

तनु ये सारे artwork तुम्हारी हैं? बेहतरीन लाजवाब सुपर्ब....

नरेश तनु को बहुत बधाई देता हैं। फिर ऐसे ही कई दिन बीत जाते हैं। रमन अपनी पढ़ाई से मतलब रखता था उसे कोई खाश फर्क नहीं पड़ता था। कक्षा के कुछ होशियार लड़के जो तनु के साथ रहते हैं। वो लड़के आपस मे बात कर रहे थे ।

यार ये सूरज द' गवार आज-कल ज्यादा नहीं होसियार हो गया हैं। यार हम जब तक मालूम करते हैं। तब तक में वो जबाव दे देता हैं

तनु की समूह की एक लड़की उनसे कहती हैं। वो जो लड़का उसके बगल में हैं। रमन |

वो ही सूरज को सब बताता हैं ।

अब बिच में तनु भी उनके बीच में घुसती हैं।

सुनो उसे अपनी औकात पता"है! ओर हम कौन हैं? हमें पता हैं।

वो नया-नया हैं। तो हवा में उड़ रहा हैं। सबको पता हैं इस स्कूल की पढ़ाई कैसी हैं? ज्यादा दिन नहीं उसके नंबर हम से भी कम आने वाले हैं। यकीन नहीं है!तो शर्त लगा लो।

रमन किसी से खाश मतलब नहीं रखता था। वो ज्यादा समय सूरज के साथ ही रहता था ।

एक दिन ऐसा होता हैं फिजिक्स के शिक्षक

अपने परीक्षा की बात कहते हैं।

चलो बच्चों जैसे कल कहा था। आज के दिन तुम्हारा मौखिक परीक्षा हैं। लेकिन परेशानी की बात ये में आह थोड़ा व्यस्त हुँ। आप लोग दो-दो का जोड़ा बना कर आपस में सुनो हारने वाला पीछे चले जाओ । ओर जो जीत जाये वो दूसरे जितने वालों से जोड़ी बनाये ओर। परीक्षा को जारी रखे। अब शुरु करो। सभी इस परीक्षा में भाग लेते हैं तनु भी खेलती हैं। तनु ने कई लड़की ओर लड़कों को हरा कर काफ़ी आगे पहुंच जाती हैं। उधर रमन ओर सूरज भी सबसे आगे थे। मगर अंत में सूरज खुद को बलिदान दे देता हैं।

रमन सुरज से कहता। इस प्रश्न का उत्तर मैंने तुम्हें बताया हैं। रमन सूरज को जबाव देने को बोलता हैं। शिक्षक भी यहाँ हैरान था । एक ओर तनु फाइनल में पहुँच गयी थी। इधर सूरज या रमन में से कोई एक, आगे आने वाला था ।

देख भैया रमन तूने मुझे यहाँ तक लेकर आये हो । THANKS में तुझे कभी नहीं हरा नहीं सकता हूँ। जैसे तुम कहते हो । जैसे तुम्हारी जीत में मेरी जीत हैं। ठीक उसी तरह तुम्हारे जीतने के बाद में ही जीतूंगा। अब आगे बढ़ भाई। मचा दे तबाही।

अब पहली बार तनु ओर रमन आमने-सामने थे। तनु अपना पहला चाल चलती हैं।

LAW OF CULOAM?

रमन शांत था। वो शायद जबाव नहीं देना चाहता था। या देना ही नहीं चाहता हैं। पीछे वाले सब बच्चे सब हैरान क्योंकि रमन ने ये ही LAW पूछके सबको हराया था। सभी हंस रहे होते।

चल दूसरा पूछती हूँ।

AACRMIDIJ PRINCIPAL?

रमन फिर से कोई उत्तर नहीं देता हैं?

तनु घमंड से भर जाती हैं। और कहती हैं। तू हार मान रहा हैं?

रमन कोई जबाव नहीं देता हैं

सर देख लो! मैं जीत चुकी हुँ।

शिक्षक रमन से पूछता हैं। बेटा क्या बात हैं? एक भी जबाव नहीं दे रहा हैं।

सर जबाव दे दूंगा! तो ये हार जाएगी। फिर ये मायुष हो जाएगी। सर किसी की खुशी मैं नहीं छिन सकता ।

सीधा-सीधा बोल तू हार गया । कहानी क्या सुना रहा हैं।

रमन तनु की बात सुन के मुसकुराता हैं। ओर पीछे चला जाता हैं।

क्लास के आधे बच्चे रमन को देख के खुश थे ।

अब अगले विषय का घंटी बजती हैं।

फिर आते नरेश सर । अपने चिर परिचित अंदाज मैं ।

ये क्या देख रहा हूँ। आज कोई मायूष बैठी हैं। क्या बात हो गयी तनु । (नरेश भी मुस्कुरा रहा था)

सर में आज बात नहीं करुंगी ।

क्या सुनाई नहीं दे रहा हैं? नरेश कहता हैं।

सर में आज किसी से भी बात नहीं करूँगी। ओर आप भी मुझसे बात करो । तनु चेहरे को किताब में ही डाल के बात कर रही थी।

चलो मगर किसने रुलाया हैं! आपको ये तो बताओ ।

सागर एक लड़का जो तनु की टीम का ही था ।

फिर वो पिछले परियड की बात बताता हैं। नरेश खूब हँसता हैं। तनु ओर भी गुस्सा हो जाती हैं।

तनु और रमन दोनों ही एक तलवार थे और क्लास एक म्यान जैसी थी। दोनों ही उसे क्लास में समा नहीं पा रहे थे। उनके बीच में कई बार ननोक-झोक हो जाती थी कई बार कहा सुनी भी हो जाती थी।

दोनों में एक बात का अंतर तो था। रमन हमेशा लिखता रहता था और रट्टा मारता रहता था। और तनु किसी भी चीज को एक बार पढ़ कर उसे याद कर लेती थी। ऐसा तनू को लगता था।

एक दिन तनु अपने ड्राइंग में मगरूर थी। और साथ में उसकी सहेली सपना एक किताब को पढ़ रही थी।

दीपा पीछे से आती तनु के बगल में बैठती है।

तनु!... मैं अभि पीछे से आ रही हूँ। मैंने एक-एक किताब देखी है मगर जिसे रमन पढ़ रहा हैं। वो काफी अलग थी । जो किताब हम पढ़ रहे हैं।

तनु सोंचते हुए दीपा को देखती हैं।

क्या बात करें रही हैं?

हैं! वो देख ।

रमन की गाइड सच में काफी अलग और महँगी लग रही हैं।

सपना बोलती हैं।

और हमें क्या हमें तो हमारी सस्ती सी गाइड अच्छी हैं।

तनु को कुछ विचार आता हैं। तो वहतं खड़ी होती हैं। वो क्लास के उस हिस्से में जाती। जिस हिस्से में वो आज तक नहीं गयी। क्लास के ज्यादा पीछे जाती। ओर किसी भी जान पहचानकी लड़की से बात करने लगती हैं । तनु आँखें तिरछी कर रमन के बस्ते में झाँकने लगती है। सूरज इस बात पे गौर करता हैं। रमन को इसारे से बताता है। रमन तनु को देखता हैं।

ओह hello! मैडम! आप के पास दिमाग़ नहीं हैं। तुम जो दूसरों के बस्ते में झाँक रही हो इसका मतलब क्या हैं।

फिर तनु कहती हैं। माफ़ करना। क्या बोला ।

अकल की अंधी, आँख की अंधी। कहकर रमन आगे जाने वाला होता हैं।

किस बात पर घमंड है तेरे में किस बात की घमंड है। तनु गुस्से में बोलती है।

देख रमन ज्यादा घमंड ना कर तोड़ दूंगी। और टूट भी जाएगा तेरा घमंड भी और! तू भी तुम दोनों मेरी आगे कुछ भी नहीं हो।

देख तनु मुझे ना तेरी दोस्ती पसंद है ना दुश्मनी पसंद है।

दोनों ही सूरत में तुम मूर्ख है और मूर्खा से मित्रता भी उचित नहीं।

रमन उठ के आगे चल जाता है तनु अपने गुस्से को कंट्रोल करने की कोशिश कर रही होती है। तनू अपनी मुट्ठियों को कस के बांध चुकी थी।

तभी रमन और सूरज के माथे पर एक-एक बस्ता जाकर लगता है। दोनों जमीन पर गिर जाते हैं। तनु इतना उत्पाद मचाने के बाद चुपचाप कमरे से बाहर निकल जाती है। रमन उठता है। अपने दोस्त को भी उठाता है फिर अपने कपड़े झड़ता है। और तनु के बस्ते के पास जाता है। और तनु का बस्ता उठाकर उसके अंदर का सारा सामान बाहर फेंक देता है। और उसने जो Artwork की फाइल बनाई थी उसके भी टुकड़े-टकडे कर करके इधर-उधर बिखेर देता है।

तनु बहार से फिर दौड़ते हुऐ आती है और रमन के एक लात मारती है और फिर दोनों आपस में हाथापाई कर लेते हैं।

यह लड़ाई अब क्लास से निकल के क्लास के बाहर चली जाती है पूरे स्कूल का हुजूम इन्हें ही देखने लगता है।

फिर कुछ लड़कियां व लड़के जाकर इन्हें छुड़वाते हैं।

तनु अपने चित्रकला की फाइल का नुकसान देखकर रह नहीं पाती है वह रोने लगती है।

पिछली बार की लड़ाई हुई काफी दिन बीत चुके थे।

अब तनु में काफी बदलाव आ चुके थे वह दिन भर अपने चित्रकला की फाइल को निहारती रहती थी क्योंकि अब वह पहले जैसी नहीं दिख रही थी। तनु उसे टुकड़ों से जोड़ चुकी थी और उसमें से भी कई टुकड़े गायब थे।

एक बार नरेश आता है।

नरेश तनु से उसकी चित्रकला की किताब मांगता है।

तनु देने से मना कर देती है।

नरेश कहता है! क्या बात है! तनु अब तुम अपनी चित्रकला किताब क्यों नहीं दिखती हो मैं इसका नक़ल नहीं करूंगा।

तनु रुआसी सी आवाज में रहती है कि सर अब यह किताब देखने लायक नहीं रही।

अरे फिर भी कुछ किताब को देखा है। और उसे किताब को देखते हुए अफसोस जाहिर करता है।

तनु से पूछता है यह किसने किया।

तनु इशारे से रमन की ओर हाथ करती है।

नरेश फिर तनु को समझता है। देख तनु जो होता है अच्छे के लिए होता है। अब तू ही! सोच! तू फटे जींस का कहां से आया है। कैसे आया किसी का जींस फटा होगा। उसे बहुत अफसोस हुआ होगा मगर किसी ने समझाया हुआ है! कि जो होता है अच्छे के लिए होता है। अब तू अपने चित्र में ही देख कितनी सारी और रेखाएं बन गयी हैं।

देखो तनु! मैं तुम्हें इंग्लिश के बारे में बताता हूं। इंग्लिश जो शब्द है वह कपड़ों से भी उतना ही जुड़ा रहता है। अगर धोती कुर्ता पहना हुआ व्यक्ति इंग्लिश बोलता है तो वह अलग लेवल पर चला जाता है। क्योंकि ऐसा बहुत कम होता है की धोती कुर्ता पहना हुआ व्यक्ति इंग्लिश बोल रहा हो।

मगर कोर्ट पैंट पहनाने वाला व्यक्ति लाजमी बातें की वाह इंग्लिश में ही बात करेगा।

तो तुम मुझे थोड़ा सा कपड़ों के बारे में समझाओ?

तनु अपनी फाइल को अपने सीने से लगती है।

मुझे किसी भी ब्रांड का कपड़ा पहनना अच्छा नहीं लगता है मैंने एक लड़के को देखा। जिसने अच्छे मेहेंगे कपड़े पहन रखे थे अभी तक उसे ब्रांड का कोई नाम नहीं था।

फिर मैंने देखा कि उसके दोस्तों ने भी उसी ब्रांड के कपड़े पहन रखे हैं। इससे क्या हुआ। उसे लड़के ने अपने पैसे से खरीद के एक कपड़ा पहना। उसे पहन के बाजार में घूम। उसके दोस्तों ने भी वह

कपड़ा फिर खरीद और वह भी बाजार में घूम। कपड़े अगर सेलिब्रिटी लोग पहनाते हैं। तो वह इस कपड़े को पहनने से पहले एक ऊंची दाम बोलते हैं। फिर वह पहन के घूमते। कुछ कपड़े की मार्केटिन्ग होती। बिल्कुल ऐसा ही काम उसे लड़के ने भी किया था मगर उसे लड़के ने मार्केटिंग करने के बदले पैसे देने पढे सेलिब्रिटी ने मार्केटिंग करने के बदले पैसे लिए। और सर मैं अपने शरीर पर किसी ब्रांड के महंगी कपड़े क्यों पहनू। उसे कपड़े की वैल्यू बहुत ज्यादा हाई हो जाती है। और सर मैंने यह भी देखा है कि कपड़े कितने छोटे होते हैं। उतने महंगे होते हैं।

तनु का एक दोस्त तनु को टोकते हुए कहता है।

फिर तो तुम्हारे कपड़े भी महंगे होगे ना।

फिर तनु कहती है।

मैं यही चीज तो बदल के दिखाऊंगी।

तनु और उसकी सहेलियां खाना खा रही होती है। सरप्राइज दिपा! दिपा को छेड़ते हुए! सपना कहती है।

देख सतीश आ रहा है। बहुत दिनों बाद पागल पता नहीं कहां था। इतने दिनों बाद आए हैं। तेरे से मिलने आ रहा है।

सतीश आकर सबका अभिवादन करता है।

थोड़ा हम सतीश के बारे में जान लेते हैं।

सतीश उसे क्षेत्र का वह उस स्कूल का सबसे हरामी और बदमाश लड़का होता है। उससे कोई भी पंगा लेना नहीं चाहता है।

सतीश तनु से पूछता है?

तनु क्या हाल है? क्या बात हो गई।

सपना तनु के कान में कहती है।

सुन कुछ भी हो जाए इस बात का पता नहीं चलनी चाहिए वरना यह रमन को बहुत बुरे तरीके से पिटेगा।

तनु सतीश से कहती है भाई मेरा हाल बहुत ठीक है मुझे कोई दिक्कत नहीं है।

तो मैंने सुना है कुछ दिन पहले तुम बहुत लोकप्रिय हो गई थी।

फिर तनु देखती है। कि रमन और सूरज बाहर निकल गए क्लास के। तनु कुछ इस तरीके से बात कर रही होती है। जिससे रमन को लगे। की तनु मेरे खिलाफ सतीश को भड़का रही है। वह हाथ दिखा-दिखा के सतीश से बात कर रही होती है। और रमन का दोस्त सूरज जो सतीश के बारे में जानता था वह डर रहा था।

तनु सूरज के ऊपर हावी डर को बड़े आराम से देख पा रही थी।

सतीश पूछता है। क्या बात है?

तनु हंसते हुए कहती है। भाई जो बात थी मैंने उसे समेट दिया मैटर सॉल्व.

तब तो ठीक है। सतीश कह कर चला जाता है।

स्कूल की छूठी होती है। सतीश बाहर किसी का इंतज़ार कर रहा था। रमन ओर सूरज बहार आतें है । कुछ लड़के रमन को पकड़ते है। सूरज रमन को छोड़ने को कहता है। वो लोग उसे भी साथ ले जाते है। रमन ओर सूरज को सतीश के गुंडे गली के एकांत में ले जाकर खूब मारते है। सूरज रमन को बचाने के लिए रमन के ऊपर लेट जाता है। वो लोग सूरज को इतनी बुरी तरह से मारते है। रमन से ज्यादा सूरज मार खाता है। फिर गली के लोग बीच –बचाव मैं आते है। तब सतीश के गुंडे भागते है। गली के एक भैया उन दोनों को हॉस्पिटल लेकर के जाते है।

रमन ओर सूरज काफी दिनों से क्लास में अनुपस्तित थे।

तनु का बदलाब

आज रमन कई दिनों बाद स्कूल आता है। उसके हाँथ में पट्टी, माथे पे पट्टी चोट के निसान आराम से देखे जा सकते थे । रमन आते ही उसे ढूंढ़ता है। जो उसके बगल में बैठा करता था। वो भी कई दिनों से स्कूल नहीं आया था । रमन के कुछ ओर दोस्त थे ।

उसके समूह में एक लड़की थी। सामान्य बच्चों की तरह। मगर उसकी शादी हो चुकी थी। वो रमन को सहारा दे कर बिठा थी है। रमन रुपा से पूछता है। सूरज नहीं आया तब से?

रुपा सर हिला कर जबाब देती है ना। रमन गहरी सांस लेता है। ओर तनु की ओर बिलकुल गुस्से से देखता है ।

तनु दीपा से पूछती है।

वो अभी भी मुझे देख रहा है?

अगले दिन सुरज लंगड़ाते हुए आता है।

लंगड़ते हुई दौड़ता है। उसके दर्द की सिमा को रमन और वह खुद ही जान सकते है।रमन के गले से जा लगता है। यार तू ठिक है ना, यही आशा कर रहा था की तुझे कुछ ना हो। दोनों गले लगते हुए रोने लगते है। पूरी क्लास ये देख के भाभूकः हो जाते है। दोनों के

आँखों की आंसू रुक नहीं रहे थे। सुरज कहता है।यार मैने तो उसकी फीिल्डिंग बना दी है। अब देख क्या काण्ड होगा?

रूपा उन्हें शांत कराती है।

एक दिन कुछ औरतों का समूह आता है। उसमें से एक लड़की की शादी होती है। तो वह लोग तनु के घर शादी का जोड़ा सिलवाने जाते है । तनु कपडे को बेहतर ढंग से सिल सकती है। वो अपने इलाके का एक उम्दा दर्जी होती है। और वो कपड़ों को नये नये कला, ढंग में सील सकती है। और बहुत ज्यादा मुँह फट भी । मगर वो अपने हाथ के करिगारी से सबका मुँह बंद कर देती है। उन औरतों के समूह में एक औरत होती है। जो पीछे काफ़ी शांत और अजीब ढंग से कपडे पहने थे। तनु शादी वाली लड़की से हंसी मज़ाक करती है। सबके लिए जो कपडे उसने बनाये थे। सभी को पहन के दिखाती है। फिर तनु उस महिला को भी पहनने को कहती है। वो शर्मा के मना कर देती है। मगर तनु और बांकी की महिला मिलकर खूब जोर जोरजबरदस्ती करती है।

आंटी आप नहीं पहनोगी तो मै खाना नहीं खाऊंगी।

तनु ऐसी शब्द बोल के अंत में उस महिला को मना लेती है।

जब वो औरत उस लहंगे को पहनती है।

तनु और सभी महिलाओ का मुँह खुला का खुला रह जाता है।

वो महिला वाकई काफी सुन्दर थी।

तनु कहती है।

आंटी आप मेरी माँ बन जाओ। तब मै भी बोल पाऊँगी! की मेरी माँ बहुत सुन्दर है।

अगले दिन स्कूल मे

स्कूल में आज नरेश सर को सम्मानित किया जाता है।

तनु के कपड़ों के art book को हाँथ में लेकर वो तनु से बात कर रहा होता ।

तनुbअपने काम मे मगरूर होते हुए। कहती है।

मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा है।

नरेश बातों में गंभीरता लाते हुए । तनु को समझाता है। इन कला को social मीडिया पे डालना होगा। तुम्हें एक मॉडल रखना होगा। जो तुम्हारे ये कपडे पहन कर , तुम्हारा प्रचार कर सके। हम एक टीम बनाएंगे। जिसे हम संचालित करेंगे। और मैं ऐसे कई बड़े सिलेब्रिटीज को जानता हूं जिन्हें मुझे लगता है। हम उन्हें फॉलो करके रख सकते हैं। बस एक अच्छी किस्मत की बारी होगी और तुम्हारी जिंदगी बदल सकती है।

वह तनु को इतने सारे सपने दिखा देता है। कि वह एक नई उमंग जोश में भर जाती है और फिर तनु एक नए सफर की और निकलती है सोशल मीडिया का सफर ।

सूरज का सतीश पे हमला।

सूरज को लोग जितना ही गवार समझते थे। सूरज आज रमन के साथ रहकर उतने ही तरीके जानता था। सूरज ने एक कला सीख ली थी। किसी की भी लेखन प्रक्रिया का नकल करना।

वह एक दिन कम से कम 20 से 30 पत्र लिखता है

सारे पत्र सतीश के खिलाफ लिखकर शिकायत पेटिका में भर देता है। जिसमें कई लोगों के द्वारा सतीश की शिकायतें की जाती है। तो स्कूल का चपरासी उसे शिकायत पेटिका को खाली करता है। और सारे पत्र प्रधानाचार्य महोदय को दे देता है। प्रधानाचार्य महोदय की सतीश से वैसे ही शुरू से ही अनबन होती है। अगले दिन प्रार्थना सभा में सतीश को याद किया जाता है। मगर सतीश वहां नहीं उपस्थित होता है। सतीश के कक्षा नायक से पूछा जाता है क्या वह क्लास में उपस्थित होता है। कक्षा नायक उन्हें मना कर देता है। स्कूल के प्रधानाचार्य सतीश को स्कूल से नाम काटने का चेतावनी देते हैं। लंच में जब तनु खेल रही होती है। वो देखती है कि सतीश प्रधानाचार्य के कक्षा के बाहर हाथ ऊपर करके खड़ा होता है।

तनु को यह अच्छा नहीं लगता कि उसका मुंह बोला भाई ऐसे खड़ा हो।

फिर तनु अपना जासूसी दिमाग चलाती है।

तनु और दीपा आपस में बात कर रहे होते हैं।

दीपा मैंने पता लगाया है। चपरासी से की एक दिन पहले उसमें एक भी पत्र नहीं था और दूसरे ही दिन उसमें 20 से 30 पत्र आ गए इसका मतलब यह है कि पत्र को एक ही दिन में डाला गया है। तो पक्का है कि सारे पत्र नकली हैं। या सतीश को फसाया जा रहा है। मगर कौन?

तनु सारे पत्रों को अपने पास रखती है।

अगले दिन तनु की एक गाइड गायब हो जाती है।

देखो मेरे दोस्तों मेरी एक गाइड गायब हो गई है। तो मैं!आग्रह करती हूं कि मैं सबके बस्ते में बारी-बारी से तलाशी लूंगी वह मेरे दोस्त हो दुश्मन हो या कोई अनजान व्यक्ति भी।

फिर तनु सबके बस्ते में अपनी गाइड ढूंढ रही होती है। मगर वह गाइड नहीं ढूंढ रही होती है। हर एक के कॉपी के पन्ने को देख रही होती है। और जब वह पूरी क्लास की बस्ते में तलाशी कर लेती है और दीपा के पास आकर कहती है।

दीपा यह जो अध-मरे हैं ना... रमन और सूरज यह आज फिर से पीटने वाले हैं।

मतलब क्या कह रही है। दीपा और सपना पूछता है।

इन बेवकूफों ने पत्र तो अच्छे लिखे थे। कोई भी नहीं समझ पाता की एक आदमी ने लिखे हैं। मगर गधों ने एक गलती कर दी। सारे

के सारे कागज एक ही कॉपी के थे। और वह कॉपी उन्हीं के पास है और कागज फटे हुए भी हैं।

फिर कुछ देर बाद सतीश और उसके लोग आते हैं।

वह रमन को गर्दन से पकड़ते हैं, और दीवार में चिपका देते हैं।

पूरी क्लास की दृश्य को देख रहे होते हैं। सबकी सांसे थमी रहती है। तनु दीपा बहुत ही ज्यादा खुश होते हैं।

सतीश कहता है। तुम मेरे ऐसे शिकार हो जिसने मुझ पर दोबारा हमला किया। मगर मैं जब दोबारा शिकार करता हूं। तो पहले खाल खिंचता हूं, की हड्डी तोडता हूं।

तभी क्लास में एक अध्यापक का प्रवेश होता है। वह अध्यापक नरेश होते हैं। आते ही चिल्लाते हुए। सतीश को बाहर जाने के लिए कहते हैं। सतीश चुपचाप बाहर चला जाता है।

रमन निशब्द, हताश, बहुत परेशान हो जाता है।

शिशक-शिशक के रोने लगता है और कहता है। भाई मैं तो केवल पढ़ने के लिए आया हूं। मुझे तुम इन फालतू की राजनीति में क्यों घसीट रहे हो। ना मुझे किसी को हराना है ना मुझे किसी को जिताना है। मुझे किसी से कोई मतलब ही नहीं रखना क्यों सब मेरे पीछे पड़े हुए हो।

पूरी क्लास रमन को देख रही होती है।

तनु कहती है। सब कर्मों का फल है।

रमन के साथ जो एक लड़की उसके सहायता में बैठी रहती है। रूपा उसे चुप करवाती है। और उसे समझता है।

मुझे पता नहीं भाई तू कहां से आया है। अगर तुम लोगों से अच्छा हो। तो लोग तुझे जलेंगे और यह राजनीतिक तेरे साथ जरूर होगी। तुझे खुद को इस काबिल बनना होगा इस राजनीति से बच सके।

रमन! सूरज के पास से उठकर और पीछे चला जाता है और अपनी किताबें पढ़ने लगता है।

स्कूल की जब छुट्टी होती है सभी बच्चे बाहर निकल रहे होते हैं आज फिर सतीश किसी की तलाश में खड़ा होता है। सूरज को देखा है और उसे पूछता है।

मेरी जान कहां है वह?

फिर सतीश का एक साथी उसे इशारा देते हुए कहता है कि! वह आ रहा है।

आज रमन की खैर नहीं थी।आज वह लोग रमन को बहुत ही बुरी तरीके से पीटने वाले थे। वह सब दौड़ के जाते हैं रमन को पकड़ने के लिए। रमन हाथ जोड़कर बैठ जाता है। और लोगों से माफी मांगने लगता है। मगर सतीश दौड़ता हुआ उसे लात मारने की कोशिश करता है। इस बार उसके बीच में कोई आता है। सतीश को रोकती है।

बस सतीश बस अब और नहीं। नरेश सर भी आते हैं। उनके साथ कुछ बड़े क्लास के लड़के भी होते हैं।

शाबाश तनु मुझे लगता ही था कि तुम मेरी बातों को समझ सकती हो।

तनु मायूष होकर चली जाती है सतीश भी चला जाता है। रमन को वह लड़के अपने साथ उठा कर ले जाते हैं।

अगले दिन। सभी बच्चे क्लास में होते हैं। मगर एक बच्चा क्लास में नहीं होता है वह रमन होता है। वैसे क्लास मास्टरौं को कोई खास फर्क नहीं पड़ता है कि रमन होता है या नहीं। क्योंकि रमन क्लास के किसी भी कार्यक्रम में भाग लेने में दिलचस्पी नहीं दिखता। फिर नरेश सर आते हैं। वह रमन को ही ढूंढते हैं।

नरेश सर पूरी क्लास को इंग्लिश पढाते हैं। तनु की बात वैसे भी नरेश सर से ज्यादा होती है। तनु नरेश से कहती है।

सर आज रमन नहीं दिख रहा है क्या उसने कल ही नाम कटवा लिया।

नहीं तनु। वह अब कुछ दिनों तक बड़े क्लास के बच्चों के साथ ही पड़ेगा।

तनु चुटकी लेते हुए कहती है। इस क्लास की पढ़ाई तो उसे हो नहीं पा रही है अब बड़े क्लास के बच्चों के साथ पड़ेगा।

नहीं तनु! यह बात नहीं है। उसने पहले ही सारे सिलेबस खत्म कर दिए हैं। और प्रिंसिपल ! साहब को भी उसकी सुरक्षा का ज्यादा ध्यान रखना था। इसीलिए वह बड़े क्लास के बच्चों के साथ पड़ेगा कुछ दिनों तक।

दीपा हंसने लगती है। तनु को देखकर ।

तनु बात काटने के लिए नरेश सर से कहती है।

नरेश सर मैं कल आपकी बात समझ गई आप क्या कहना चाह रहे थे।

नरेश सर हामी भरते पूछते हैं क्या?

सर मैंने देखा कि अगर मैं अपने डिजाइन किए हुए कपड़े पहन के बाहर निकलती हूं। ना तो लोग मुझे पागल बेवकूफ जैसे शब्द से संबोधित करने लगते हैं। यही अगर कोई अमीर आदमी यह कपड़े पहन के बाहर निकलेगा तो लोग उसकी प्रशंसा करते हैं। लोगों का जब मानना है इस प्रकार की कपड़े सिर्फ अमीर लोग ही पहन सकती हैं उनके बाद हम पहनेगे।

नरेश सर कहते हैं। करेक्ट।

तो सर आप मेरा social media page बनाने में मेरी मदद करें।

कुछ दिनों तक यह कार्यकलाप चलता रहता है। तनु भी रमन को पढ़ाई में चुनौती देने के लिए बिल्कुल रमन के जैसी ही किताबें खरीद चुकी थी। जिन किताबों से रमन अध्ययन किया करता था। एक दिन रमन बड़े बच्चों की क्लास में पढ़ रहा था।

तो उसकी पास एक गाइड नहीं थी। शायद वह है। गलती से घर पर भूल गया होगा। वह बहुत परेशान होता है। फिर वह अपनी क्लास में जाता है। और तनु से वह गाइड मांगता है। पूरी क्लास

इन दोनों को फिर से देख रही होती हैं यह दोनों अब फिर से लड़ेंगे। फिर से मार कुटाई देखने को मिलेगा।

मगर?

रमन तनु से गाइड मांगता है।

तनु आप मुझे अपनी केमिस्ट्री की गाइड दे दो मुझे पढ़ना है।

तनु कुछ बिना सोचे समझे, बिजली की रफ्तार से गाइड निकालती है। और रमन को दे देती है। यह सच में कुछ अलग हुआ। मुझे भी नहीं पता था कि अब यह होने वाला है। मगर यह कैसे हुआ। मगर जो भी हुआ अच्छा हुआ। अब इसके आगे तो सुनो।

रमन जब उस गाइड को खोलता है। पहले सफेद कागज में फूल बना हुआ नजर आता है। और फिर जितनी भी हस्तियों के उसमें चित्र बने होते हैं सबको सब चित्रों में तनु ने अपनी ड्राइंग कर रखी होती है किसी-किसी को लहंगा पहन रखा है तो किसी को सूट सलवार ऐसे ही करके उसने सारी गाइड की चित्रों पर कुछ ना कुछ बना ही रखा है। जितने भी बड़े लड़के होते हैं इन चित्रों को देखकर खूब हंसते हैं। पेट पकड़-पकड़ के लोटपोट हो जाते हैं। रमन जो कभी नहीं मुस्कुराता था। वह भी मुस्कुरा रहा होता है।

लड़के उससे पूछते हैं।

यह गाइड तेरी है?

नहीं। रमन कहता है।

तेरी बहन की गाइड है।

नहीं।

तो भाई साहब यह गाइड किसकी है?

मेरे क्लास की एक लड़की उसकी गाइड है।

फिर रमन क्लास में आकर तनु को उसकी गाइड देता है।

और चुपचाप पीछे जाकर बैठ जाता है।

तनु अपनी सहेली दीपा से कहती है।

यार कैसा लड़का है? सॉरी ना, थैंक यू, ना कुछ,

तनु उसकी ओर पलट के शायद उससे कुछ कहना चाहती थी?

वह देखती है। कि रमन की पट्टियाँ हट चुकी थी।

फिर तनु के मन में क्या विचार आता है। वह रमन को पास से देखना चाहती थी। मगर वह खिड़की के पास बैठा था तो वह नहीं देख पाती है। क्लास के पीछे जाती है। स्कूल के क्लास के पीछे कॉपी झाड़ियां वह गंदगियां पड़ी होती है। तनु आज उन्हें भी लॉन्घ जाती है। तनु को हल्का-हल्का पसीना भी आ रहा होता है। वह क्लास रूम के पिछले हिस्से से रमन के पास जाने की कोशिश करती है। सरकारी स्कूल के पीछे जंगल हैं, काँटों वाले पेड़ हैं। उन पर चढ़कर वह रमन की खिड़की के पास पहुँचती है। और खिड़की की चौखट से रमन को देखने की कोशिश करती है। उसे डर भी था कि कोई उसे देख लेगा। उसके कपड़ों पर गंदगी लगी थी। कॉटे टूटकर उसके कपड़ों

में चिपक गए थे। वह देखती है कि। रमन गाइड के बीच में रखकर एक डायरी पड़ रहा होता है। जिसमें बहुत ही गंदे तरीके से कुछ लिखा हुआ होता है। तनु को वह बिल्कुल भी समझ नहीं आता है। तनु की परछाई रमन के हाँथ पे पड़ती है। रमन जैसे ही मुड़ने वाला होता है तनु खुद को छिपाती है। बिलकुल दिवार पे खुद को चिपकती है। जैसे वो खुद ही दिवार हो। रमन बाहर इधर उधर देखता है, मगर कोई होता नहीं है, तनु चिपकली की तरह दिवार पे चिपक जाती है। फिर मौका देख के भाग जाती है।

क्लास में नरेश सर आते है। सुनो बच्चों हमारे स्कूल से कुछ बच्चों को जिलास्तारिये प्रतियोगिता है । इस क्लास से दो बच्चों को चुना गया है। पहली है। हमारी तनु सभी बच्चे ताली बजाते है। तनु हाँथ जोड़ कर अभिभादान करती है। फिर सर दूसरे नाम लेते ।

दूसरा है । रमन

क्लास के कुछ बच्चे तालियां बजाते है

रमन को कुछ भी पता नहीं था। वो इइध-उधर देख के फिर पढ़ाई करने लगता है

तनु नरेश से पूछती है हम दोनों को विषय एक है?

नहीं! तुम्हें कला के लीऐ । चुना गया है। वह उसे गणित के लिए ।

फिर तनु कहती है। अरे सर पिछली साल मैने गणित मैं स्कूल का नाम ऊँचा किया था। इस साल गणित क्यों नहीं

नरेश कहता है। क्योंकि मैं कह रहा हूँ तुम अपनी टीम बनाओ ।

कुछ दिनों बाद। रमन वह तनु दोनों अपनी-अपनी टीम बनाकर तैयार थे।

रमन के साथ रूपा खड़ी थी। और तनु के साथ उसकी दो सहेलियों के साथ-साथ और भी छोटी क्लास की लड़कियां खड़ी थी।

रमन रूपा से कहता है।

क्या हमारे साथ यह है। वानर लोग भी जाएंगे।

रुपा हामी भरते हुए कहती है।

हक तो इनका भी बनता है।

रमन फिर रूपा से कहता है। मगर आप मेरे साथ ही रहना।

रूपा रमन से कहती है।

देख रमन मैं तेरे साथ चल सकती थी।मगर मेरे पति मेरे साथ जाएंगे वही मुझे लेकर जाएंगे और लेकर आएंगे।

मैं इन ढोंगी के साथ नहीं जाऊंगा। रमन लड़कियों के साथ जाने से मना कर देता है।

रूपा समझाते हुए कहती है। देख तेरे पास दूसरा रास्ता नहीं है।

रमन अकेला ही चलने लगता है।और कहता है। मुझे पता है मुझे जाना कहां है। मैं अकेले ही सही सलामत पहुंच जाऊंगा ।

नरेश सर रमन की नहीं सुनते है उसे ऑटो रिक्सा के पीछे बैठा देते है। और सभी बच्चे तनु और रमन के साथ अपने मंझील पे पहुंचते है। उस जगह की एक अलग पहचान होती है। वहाँ सैकड़ों बच्चे होते है। सभी अपनी कला का प्रदर्शनी कर रहे होते है। रमन ये सब कुछ पहली बार देख रहा होता है। रूपा रमन को धन्यवाद करती है। क्योंकि उसने ये सब रमन के कारण देखा होता है। तनु को इन सब चीज की आदत हो चुकी थी । तनु यहाँ भी अपने आप को बेहतर समझाने की कोशिश करती है। तनु पिछली बार भी यहाँ जीत चुकी थी। तो वह अपनी फोटो सबको दिखाती है। कैसे उसे इनाम मिल रहा है। नरेश सर तनु को अपनी तैयारी करने को कहते है।

इस जगह सभी बच्चे पश्क्षमी कला में नृत्य प्रस्तुत कर रहे है। नरेश सर रमन ओर रूपा को उसके केंद्र पे छोड़ के आते है। गणित की परीक्षा के लिए। तनु एक हरयाणवी पोशाक पहन कर अपने नृत्य को प्रस्तुत करती है। नरेश सर तनु के डांस वीडियो को बना रहा था ।

रमन रूपा परीक्षा में सफल होने से बच गए वह तनु अपनी प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ सफल होती है। अब यहाँ से जाने का समय है। नरेश तनु के वीडियो को किसी को भेजता है

नरेश सर को वह वीडियो देखते हुए किसी की कॉल आती है।

नरेश सर सभी बच्चों से बात कर रहे होते हैं।

देखो सब ने अपना बहतरीन देने की कोशिश की है। रमन तुमने भी बहुत ही अच्छा दिया है,। यह तुम्हारा पहली बार था इसलिए। तुम थोडे कंफ्यूज दिखे। और लड़कियों में तनु तो टॉप पर ही रही। और इस प्रकार की प्रतियोगिता में जाना भी मेरा पहला था। हमने जितना भी किया सबसे अच्छा हमने ही किया है। तनु पिछली बार भी टॉप लिस्ट पर थी और इस बार भी टॉप लिस्ट पर मगर इस बार इसका सब्जेक्ट थोड़ा चेंज था।

तनु बीच में टोकते हुए कहती है।

नरेश सर बहुत-बहुत धन्यवाद। पिछला विषय मेरे लिए काफी कठिन था।मगर यह वाला विषय मुझे बहुत आनंदित महसूस कर रहा है। मैं और मेरे फ्रेंड सर्कल में बहुत खुश है इस विषय पर काम करके।

नरेश सर फिर कहते हैं। और तनु एक चीज में और सर्वश्रेष्ठ है

जानते हो क्या? बीच में टोकने के लिए।

चलो हंसी मजाक की बात खत्म करते हैं। तुम में से कितने लोग यहां से खुद-व-खुद घर चले जाओगे।

अभी आपस में बातें करने लगते हैं। घबराओ मत मैं पैसे दे दूंगा नरेश सर कहते हैं। सभी हामी भरते हुए कहते हैं हम चले जाएंगे।

नरेश सर रमन से कहते हैं। रमन इनमें तुम ही एक अकेले लड़के हो तो तुम्हारा पहला फर्ज है इन्हें सही सलामत तक घर लेकर जाना। फिर तनु ठोकते हुए कहती है।

सर यह पहली बार आया है यहां से बाहर तो जा नहीं पाएगा घर क्या जाने की बात करेगा यह।

नरेश सर तनु को पैसे देते हुए कहता है। तनु और रमन तुम ही सब बच्चों को घर तक लेकर जाओगे। और नरेश सर वहां से चले जाते हैं।

रूपा और रमन अपने प्रशन पत्र को देख रहे होते हैं। तनु उनके सामने बैठी थी वह अपने कपड़ों को लेकर इठला रही थी। अब हल्का सा खुश ओर वह हल्का सा परेशान भी थी

वह चाहती थी कि रमन उसे देखें और उसकी तारीफ करें मगर रमन खुद में ही परेशान था। तभी रूपा को उसके पति का फोन आता है। रूपा वहां से जाती है अपने पति के पास और उसके पति का नाम शंकर होता है।

शंकर रूप से पूछता है। यह परीक्षा कैसा रहा?

रूपा रुचि न दिखाते हुए कहती है। सामान्य से भी कम ।

शंकर पूछता है। मतलब?

मेरा और रमन का एवरेज था। मगर वह लड़की जो हरियाणवी लिवाज में बैठी है उसका सबसे अच्छा रहा

शंकर हरियाणवी लिबास में बैठी तनु को देखते हुए कहता है।

अब दोनों में सुलह हो गई है क्या?

रूपा पूछता है कौन दोनों में?

वह लड़का तो रमन है क्या वह लड़की तनु है?

अरे रमन और तनु में सुला कभी नहीं हो सकती है?

दोनों नदी की दो कीनारो के जैसे हैं जो कभी भी नहीं मिल सकते हैं।

शंकर कहता है। अगर तुम्हें प्यार का सच सच मतलब पता हो तो। नदी के दो किनारे नदी की गहराइयों में मिलकर ही रहते हैं। वह किनारे बस समाज को दिखाने के लिए अलग-अलग होते हैं। मगर अंदर ही अंदर दोनों एक समान रहते हैं।

रूपा शंकर को डांटे हुए कहती है। मगर जो आप सोच रहे हो ना ऐसा कुछ नहीं हो सकता है।

शंकर रूपा का सर पड़कर घुमा घूमते हुए उसे दिखता है। जैसा मैं सोच रहा हूं ऐसा होने वाला है। अगर इन लड़कियों को कबाब में हड्डी बनने से रोका जाए तो।

रूप देखती हैं। कि तनु रमन को बड़े प्यार से देख रही होती है। और रमन अपनी किताब में आज भी खोया हुआ है।

रूप और रमन उन दोनों तनु के पास जाते हैं। वह लड़कियां तनु को बार-बार घर चलने के लिए कहती है। तभी शंकर कुछ आइसक्रीम लेकर उनके पास पहुंचता है। वह रमन रूपा और तनु को एक-एक आइसक्रीम देता बाकी लड़कियों को आइसक्रीम ना मिलने के कारण उनका मुंह बन जाता है।

रूपा शंकर को डांटे हुए कहती है।

आप बड़े भेदभाव करते हो आपको नहीं दिखती है कि और भी लड़कियां हैं। अब थोड़ी सी आइसक्रीम क्यों लेकर आए हो।

शंकर अपनी जेब टटोलत हुए कहता है। मेरे पास पैसे नहीं है कि मैं इनको भी अब आइसक्रीम खिला पाऊं।

तभी तनु अपने रखे हुए पैसे शंकर को दे देती है।

यह लीजिए पैसे और इन लड़कियों को भी आइसक्रीम दिला दो। शकंर उन लड़कियों को आइसक्रीम दिलाने ले जाता है और उन्हें वहीं से ही रवाना कर देता है घर जाने के लिए।

थोड़ी देर बाद तनु बाहर आती है उन लड़कियों को ढूंढते हुए।

मगर तनु देखती है कि वह लड़की जा चुकी थी। शंकर और रूपा भी जा चुके थे। पूरा स्कूल खाली हो चुका था अब वहां एक भी मनुष्य जाति का लक्षण नहीं दिख रहे थे। उस स्कूल में अब चिड़ियों की चाय चकाहट मधुर सी हवा और प्यारी सी शाम बस दिख रही थी।

फिर पीछे से रमन आता है तनु के पास

आप अभी तक गए नहीं।

तनु रमन से कहती है सब चले गए क्या?

रमन देखाता है सच में पूरा स्कूल खाली हो गया था रमन पीछे घूमता है। अपने पेंट के जेब में टटोलता है। क्योंकि उसे यह आभाष

हो चुका था। अब तनु को भी उसे ही लेकर जाना पड़ेगा। जेब टटोलने के बाद उसकी जेब में मात्र कुछ सिक्के होते हैं।

तनु पीछे से रमन को आवाज देती है।

हम कुछ दूर पैदल चल सकते हैं जिससे आगे किराया कम लगेगा। और मुझे पता है आपको रास्ता नहीं पता होगा इसलिए आप मेरे साथ चले।

फिर दोनों सहमत होकर एक साथ चलते हैं।

दोनों काफी देर तक साथ और चुपचाप चल रहे होते हैं।

फिर रमन को किसी बात पर हंसी आती है।

तनु उससे पूछती है। पागल हो क्या?

रमन जवाब में मना कर देता है।

रमन कहता है। और जो तुम राहुल वर्मा की गाइड लेकर आई हो उसे पढ़ाई कैसी चल रही है।

तनु कहती है! हां ठीक ही चल रही है।

रमन उसे फिर पूछता है। सच में उसे पढ़ाई ठीक ही चल रही है तुम्हारी।

तनु गुस्सा होकर रमन से कहती है। क्या मतलब है? तुम्हारा।

रमन हंसते हुए कहता है। उसे गाइड से मुझे भी पढ़ने में थोड़ी तकलीफ होती है मगर तब भी मैं पढ़ता हूं।

तनु डांटते हुए कहती है। तुम्हें तकलीफ होती होगी मुझे नहीं होती है।

फिर रमन पूछता है?

तुम उसे दिन स्कूल के खिड़की के बाहर क्या कर रही थी।

किस दिन तनु अपने दिमाग पर जोर डालते हुए कहती है।

तुम्हें बहुत अच्छे से पता है तनु मैं किस दिन की बात कर रहा हूं।

तनु हंसते हुए कहती है अच्छा उस दिन! तुमने मुझे उस दिन देख लिया था क्या। वैसे भी मैं देख रही थी तुम कौन सी किताब पढ़ रहे हो मैंने कोई तुम्हारी निजता का अधिकार का हानी नहीं पहुंचाया। और आप जिसकी भी डायरी पढ रहे थे ना उसका लेखन बहुत ही गंदी थी और कह रही थी। मेरे हाथ टूटे हुए हैं।

रमन के भाव अब कुछ गंभीर हो जाता है।

उसकी ऐसी आँखे देख तनु कहती है

हां ज्यादा नहीं बस दो लाइन ही पढ़ पायी थी।

तनु रमन को छेड़ते हुए कहती है। वैसे वो कौन थी?

रमन कोई जबाब नहीं देता है। तनु फिर पूछती है। कई बार पूछे जाने के बाद। रमन परेशान होकर जबाब देता हैं।

वो मेरी दीदी थी।

अच्छा दीदी थी। हाएं दीदी....... थी....... तनु हैरान हो जाती हैं।

फिर कुछ समय के लिए तनु चुप हो जाती हैं।

मेरी दीदी ग्रह- कलेश के कारण इस दुनिया को छोड़कर चली गई है। अभी भी पुलिस जांच चल रही है। हमें नहीं पता क्या मैटर है मगर वह अब इस दुनिया को छोड़कर चली गई है।

रमन मायूस होकर कहता है।

रमन फिर तनु से पूछता है मुझे यह जानना है।

जिस डायरी को मैं इतने टाइम से नहीं पढ़ पा रहा था।

तुमने उसे इतनी जल्दी कैसे पढ़ लिया।

तनु शरमाते हुए कहती है।

हां बचपन में मेरी लेखन पहले काफी खराब थी। जितनी कि तेरी दीदी ने उसे डायरी में लिखा था। फिर मेने काफी मेहनत किया और मेने अपनी राइटिंग को काफी सुधारा है। वैसे तेरी दीदी का नाम क्या था? क्या दीदी शादीशुदा थी?

रमन मायुष हो के अपनी दीदी का नाम लेता है!! नेत्री।

रमन कुछ पल के लिए रुक जाता है। तनु दो-चार कदम आगे बढ़ जाती है। फिर तनु को कुछ महसूस होता है कि जैसे ही वह अचानक अकेली हो गई हो। फिर वह पीछे मुड़ के रमन को देखते हैं रमन की आंखें तनु को देख रही होती है वह उसकी आंखें नम होती है।

तनु हंस के रमन से फिर पूछती है।

क्या हुआ? कुछ भी पूछती हूं तो तू रोने क्यों लगता है।

रमन अपनी आंखों की आंसू पोंछते हुए कहता है।

मेरी दीदी नेत्री अब नहीं रही। इस दुनिया में मगर अभी अचानक मुझे ऐसा लगा कि वह। तेरे साथ-साथ चल रही थी। मगर जैसे ही तुम पीछे मुड के देखी! तो वह गायब हो गई।

मुझे भी अभी ऐसा लगा कि कोई मेरे साथ चल रहा है।

रमन अपने दीदी पर हुए अत्याचार की कहानी तनु को सुनाता है।

मुझे नहीं लगता है। की रमन की दीदी पर हुए अत्याचार की कहानी को आपको सुनना चाहिए इससे यह कहानी और भी लंबी हो जाएगी हमारी कहानी का जो वचन है हमें उसे पूरा करना है ना कि हमें औरों की कहानी को इसमें बिना मतलब के बढाना है।

नरेश सर किसी बड़े हस्ती के घर जाता है। वह दोनों ऐसे मिलते हैं कि जैसे पुराने दोस्त हो। नरेश सर तनु के द्वारा किया हुआ डांस वीडियो उसे बड़े हस्ती को दिखाता है। और तनु द्वारा बनाया गया। Art bookbफाइल भी होता। उसे भी उस बड़े हस्ती को दिखाता है। वह आदमी उसे फाइल को तुरंत स्कैन कर देता है.

वह आदमी नरेश से पूछता है। क्या तुमने यह डिजाइन कपूर साहब को भी दिखा चुके हो?

नरेश कहता है। नहीं।

वह आदमी फिर कहता है। सवा शेख (खुद का नाम लेते हुए)

को तुमने सोने की मुर्गी दे दी है।

अगले दिन स्कूल के प्राथना सभा में तनु मंच पे होती हैं। वो प्राथना के लिए खड़ी होती हैं। स्कूल के सभी बच्चे लाइन में लगने को तैयार थे। रमन की नज़र तनु पे जा पडती हैं। तनु कुछ इस तरह से रमन को ही देख रही थी। या कहे खोज रही हो। रमन के नजर पड़ते ही तनु हाँथ हिलाकर वह अपनी आँखों की भव को आँखों के ऊपर की ओर खिंचते हुए! मुस्कुरा करा रमन को 'हाई' कहती हैं। इधर रमन शरमा जाता हैं। फिर तनु अपनी प्रर्थाना की शुरूआत करती हैं। इतनी शक्ति हमको देना दाता ।

नरेश सर काफी दिनों बाद आज स्कूल में दिखते हैं।

वो तनु से मिलते हैं

तुम्हारी डांस विडिओ मैने कई लोगों को दिखाया। सभी को अच्छा लगा। उन्होंने वीडियो को पसंद भी किया हैं। हा।.......!सच्ची बोल रहे हो आप । तनु अति उत्साहित होकर बोलती हैं ।

हां...! तनु । नरेश सर तनु को वो वीडियो दिखते हैं ।

तनु ये विडिओ रमन को भी दिखाना चाहती थी मगर रमन अपने रोज की तरह सीनियर बच्चों की क्लास में चला जाता हैं।

तनु जो क्लास में सबसे आगे रहती हैं। आज वो आगे बढ़ने में संकोच कर रही थी। वो क्लास के आगे खड़ी होती हैं। और मूढ़ के पीछे क्लास में देखती हैं। पीछे कई सारे बच्चे होते होते हैं। जो पढने में असमर्थ होते हैं। वे लोग देखने में भी अच्छे नहीं होते हैं। (ऐसा तनु सोचती हैं) जिससे वो पीछे जाने में झिझकती हैं।

वे अपने कदम को धीरे-धीरे उस ओर ले जाती वो अपने क़दमों को इतने सावधानी से रखती हैं जैसे हर कदम पे वो लक्ष्मण रेखा लाँघ रही हो। वो आज पीछे जाती हैं पीछे से पुरे क्लास को देखती हैं। वो महसूस करती हैं। पीछे कितनी शांति हैं। प्रतिस्पर्धा ओर ज्यादा नंबर लाना तो आगे की तीन पंक्तियों में होता हैं। पीछे तो आजादी हैं। आगे बंदगी हैं।

रूपा तनु को देखती हैं। और उसे अपने पास बैठने को कहती हैं। वो हिचकते बैठतीं हैं ।

एक दिन रमन अपने सीनियर बच्चों की क्लास में पढ़ रहा होता है। उन बच्चों का यह खाली समय होता है। तो वह इस समय भी पढ़ाई कर रहे होते हैं। रमन भी पढ़ रहा होता है। तभी क्लास का दरवाजा धीरे-धीरे खुलता है। सभी बच्चे वह रमन दरवाजे की ओर देखते हैं। देखते हैं कि कौन आ रहा है। तो दरवाजा को रूपा खोल रही होती है। रूपा अंदर आती है और रूपा किसी को आवाज लगाकर अंदर बुला रही होती है।

अरे..! अंदर आजा ना!

वह तनु को अंदर आने के लिए बुला रही होती है।

तनु पहली बार उसे क्लास में घुस रही होती है। पढ़ने के मकसद से। रमन तनु को देखते ही कांपने सा लगता है।हाथ पैर थर.. थर.. थर कांपने लगता है।

क्लास की ही एक लड़की रूपा से पुछती है।

क्या यह तनु है?

रूपा जवाब में हां कहती है।

फिर एक लड़की कहती है।

मैंने तुम्हें इंस्टाग्राम पर देखा है।

तनु हां दीदी कहकर उन्हें संबोधित करती है।

एक लड़की फिर कहती है।

मुझे तो लगा कि तुम घमंडी होगी?

फिर एक लड़का तनु को बताता है।

तनु हम सब एक जगह एक्स्ट्रा क्लास भी करते हैं। अगर तुम्हें एक्स्ट्रा क्लास पसंद हो तो तुम आ सकती हो।

तनु सोचते हुए कहती है।

कि ठीक है मैं बताती हूं।

तनु अपने घर में एक्स्ट्रा क्लास के लिए पूछती हैं। तो उसका भाई उसे एक्स्ट्रा क्लास में जाने के लिए स्वीकार करता है।

आज का दिन बद्री भरा था। शायद कभी भी बरसात हो सकती थी। और काफी तेज हवा भी चल रही थी। तनु रमन रूपा और क्लास की कई बच्चे एक्स्ट्रा क्लास के लिए जा रहे होते हैं। तब तनु को पता चलता है कि तनु मात्र एक अकेली लड़की थी जो अभी-अभी क्लास ज्वाइन कर चुकी है।

बाकी बच्चे उससे पहले ही क्लास ज्वाइन कर चुके थे।

तनु यहां भी अपना मुकाम बनाने की कोशिश कर रही थी। मतलब शरारत तनु को हर चीज में आगे रहने की चूल तो रहती ही थी। एक्स्ट्रा क्लास के जो मास्टर हैं। वह तनु को शांत करवाते हैं

एक्स्ट्रा क्लास के मास्टर का नाम होता है ! दीपक ।

तनु ! यहां सब बराबर है। किसी के ज्यादा नंबर कम नंबर हम किसी भी चीज को लेकर यहां विचार नहीं करते हैं। अगर किसी के नंबर काम आते हैं तो क्यों आते हैं। तो यहां आप अपने आप को ज्यादा स्मार्ट समझने की कोशिश ना करें।

तनु! दीपक से कहती है।

फिर मैं कहां कुछ कह रही हूं। मैं तो बस कुछ बोल ही नहीं रही थी।

तनु का इस प्रकार कि शीकायतों से! दीपक की हंसी छूट जाती है।

तभी राकेश का भी प्रवेश होता है।

राकेश दीपक को नमस्ते करता है और कहता है।

दीपक सर बरसात की संभावना है तो मैं रुपा को ले जा सकता हूं।

दीपक हल्का सा घबराते हुए कहता है।

क्या बरसात होने वाली है। यार आज जल्दी छुट्टी करनी पड़ेगी बच्चों की।

फिर दीपक सभी बच्चों की छुट्टी कर देता है सही बच्चे अपने-अपने रास्ते निकल जाते हैं।

रमन अपनी साइकिल निकल रहा होता है। रमन तनु को देखाता है। जो उसके अपने तिरछी नजरों से छूपके देख रही होती है।

रमन तनु से कहता है ! कि अपने भाई को कॉल कर ले?

तनु झट से जवाब देती है। भाई जॉब पर होगा।

पापा को कॉल कर ले?

पापा कंपनी में होंगे।

माताजी को कॉल कर ले?

मम्मी के आते-आते बरसात तेज हो जाएगी और जाते-जाते मैं गीली जाऊंगी।

तो कैसे जाएगी अब घर रमन पूछता है?

पहला दिन है रास्ता भूल जाऊंगी। आज मुझे घर छोड़ दे मैं कल से किसी की साइकिल मांग कर आऊंगी।

फिर रमन तनु को अपनी साइकिल पर बैठने के लिए कहता है और वह साइकिल चलाता है। रमन और तनु घर की ओर प्रस्थान करते हैं।

यह सारी लीला राकेश और रूपादेख रहे होते हैं।

राकेश अपने हाथ से ताली बजाते हुए रूपा से कहता है।

आज का शर्त तू हार गई आज भी खाना तू ही बनाएगी।

क्या मतलब है इन दोनों का? रूपा राकेश से पूछती है।

राकेश रूपा को फिर समझाता है।

यह प्यार के लक्षण होते हैं।

प्यार के कई पड़ाव होते हैं।

इनके बीच का नफरत वाला पढ़ाव खत्म हो गया है।

आप उनके बीच में होगा खोजने का पड़ाव अब यह दोनों एक दूसरे को हर जगह खोजेंगे।

रूपा फिर राकेश से पूछता है।

हमारा वाला प्यार किस पढ़ाव पर है अभी?

राकेश रूपा के कंधे पर हाथ रखकर कहता है!

समझौता !

यह पढ़ाव काफी लंबा और कष्टदायक होता है।

इतनी बात पर तेज बरसात हो जाती है। रमन तेजी से साइकिल चला रहा होता है। वह एक घर पर आकर रूकता है। वहां एक औरत बैठी होती है। तनु उन्हें देख घबरा रही होती है। तनु उस औरत को देखकर थोड़ा विचलित हो जाती है। यह वही औरत होती है जो एक दिन तनु के घर महिमा की शादी के दिन आई होती है और तनु इस नए कपड़े पहन कर आंटी की कई तारीफें कर रही होती है।

तनु अपने आप को शांत करते हुए उसे महिला को प्रणाम करती है।

आंटी नमस्ते ! एक्स्ट्रा क्लास पढ़ते हैं और यह बस मेरा दोस्त है।

रमन उस महिला को माँ कहकर संबोधित करता है।

तनु हैरान परेशान और अपने आप को कोसने लगती हैं।

है ! यह तेरी मम्मी है।

रमन हां कहता है। रमन अपनी मां को घर के अंदर लेकर जाता है उसकी मां जिस कारण घर से बाहर आकर बैठी होती है रमन की गुजर चुकी बहन की तस्वीर। आंधी आने के कारण गिर चुकी थी। वह डर के कारण घर के अंदर से भाग कर बाहर आ जाती है। तनु को कुछ समझ नहीं आ रहा होता है।

रमन फिर तनु को सारी बातें समझता है।

यह मेरी माँ है। वाहँ जो तस्वीर देख रही हो वह मेरी बहन नेत्री थी।

फिर तनु कहती है।

वही ना जिसने डायरी पर लिखा था मेरी उंगलियां टूटी हुई है।

तनु अपनी इस वाक्य के लिए माफी मांगती है। उसका यह कहने का अर्थ नहीं था। बरसात तेज हो चुकी थी रमन उसकी मां तनु बहारघर के चौंखट पर बैठकर बरसात की मजे उठा रहे होते है।अगली स्कूल में सबसे आगे वाली पंक्ति में आज एक लड़का बैठ रहा होता है। तनु उससे कहती है।

भाई आज वहां बैठ जाना या किसी और को आज बैठना हैं।

वह लड़का कुछ ना कहते हुए वह जगह छोड़ देता है। फिर रमन और सूरज आ रहे होते हैं।

तनु रमन और सूरज से पूछती है।

क्या तुम दोनों में से कोई एक यहां बैठ सकते हो।सूरज और रमन एक दूसरे का शक्ल देख रहे होते हैं।

सूरज तनु से पूछता है।

यहां तो अजय बैठता था ना।

फिर तनु बताती है।

आज अजय पीछे बैठने को कह रहा था इसलिए मैं तुम दोनों से पूछ रही हूं कोई एक यहां बैठ सकते हो।

तनु के मन में यह इच्छा थी। कि रमन उसे सीट पर बैठे क्योंकि उसकी थोड़ी बगल में तनु भी बैठी है।

मगर रमन वह जगह सूरज को दे देता है और सूरज को बैठने के लिए कहता है और सूरज भी खुशी से वहां बैठ जाता है।

तनु के भाव के आप यहां से बदल जाते हैं।

आज तनु पढ़ाई में काफी परेशान हो रही होती है। उसे सामने वाले विषय का सवाल बिल्कुल ही समझ नहीं आ रहा होता है। वह दिखावे के लिए अपनी सहेली दीपा से पूछता है क्लास की और लड़कों से भी पूछती है मगर वह भी उसका उत्तर नहीं दे पा रहे थे।

क्योंकि तनु उसे सवाल को गलत ढंग से ही पूछ रही थी। तनु दीपा से कहती है कि रमन से पूछ वह बता सकता हैं। क्या?

दीपा रमन की ओर देखते हैं और तनु से कहती है।

मैं यहां से चली जाती मगर एक तू सीट के किनारे पर बैठी है तू मुझसे ज्यादा जल्दी जा सकती है। मुझे वहां जाने के लिए तुझे उठाना पड़ेगा। फिर मैं जाऊंगी। जब तक तू यहां बैठेगी। फिर मैं सवाल का हल करवा के आऊंगी। फिर तू उठेगी। फिर मैं जाकर बैठूंगी। फिर तू बैठेगी। इतने से अच्छा की तू ही चली जा

तो फिर पक्का मै जाँउगी ! तनु कहती है।

फिर तनु उठाती है और रमन की ओर अपने कदम धीरे-धीरे बढ़ा रही होती है। पूरी क्लास अपने में मगन थी।

तनु रमन के पास जाती है रमन जो खिड़की पर बैठकर ही पढ़ाई करता था। तो रमन से कहती है तनु

यहां से बाहर का नजारा देखने में कितना खूबसूरत है ना।

रमन को नहीं समझ आता कि कौन बोल रहा है। रमन फिर घूम कर देखता है। तो तनु खड़ी होती है।

फिर तनु कहती है।

मुझे बस एक सवाल का जवाब ढूंढने आई हूं हम सब ने कोशिश कर लिया मगर हम सब से वह हल ही नहीं हो पा रहा है।

रमन कुछ बोले बिना ही उसे वह किताब ले लेता है।

उसे सवाल को बड़े ध्यान से पड़ता है।

रमन कहता है।

अगर आप सवालों को सही ढंग से पढ़ोगे तो उसमें ही उसका उत्तर निकल जाएगा। एक बार मेरे सामने आप पढ़ कर देखो।

तनु उसे सवाल को इस बार सही ढंग से पड़ती है।

तनु को रमन अब बैठने के लिए बोलता है उसे सीट पर जिस पर पहले सूरज बैठा करता था। और यह सूरज आगे से देख रहा होता है। तभी नरेश सर आ जाते हैं।

नरेश सर की पहली जिज्ञासा हमेशा तनु के अंदर ही होती थी

वह क्लास में आकर सबसे पहले तनु को ही ढूंढते हैं।

जैसे ही नरेश देखा है कि तनु रमन के पास बैठी है वह हास्य पद में कहता है।

लो भाई तनु ने भी टीम चेंज कर लिया अब वह रमन की टीम में है।

नरेश सर इसके साथ एक हादसा हो गई है। इसकी बहन अब दुनिया में नहीं रही।

तनु यह कह देती है।

नरेश सर रमन की और दया भाव से पूछते हैं।

बेटा रमन जी कब हुआ कैसे हुआ? बताओ मैं तुम्हारी कैसे मदद कर सकता हूं?

नरेश सर यह घटना तो डेढ़ साल पहले की बात है। तनु कहती है।

सूरज पर दबाव बनाती हुई यह प्रश्न फिर पूछती हैं।

तुझे सच् में पता था कि रमन के साथ इतना बड़ा हादसा हो चुका है?

सूरज आज खुद पहली बार बैठा था इतने पास से नरेश सर को देखकर दंग हो गया।

सूरज लड़खड़ाते हुए कहता है। सर यह तो मुझे खुद..... व खुद आज ही पता चला है क्या कुछ ऐसी भी बात हो रही है।

फिर नरेश सर कहते है।

पूरी क्लास इस बात को लेकर परेशान थी हम हंसे या दुख जाहिर करें।

एक दिन तनु को यह सुनने को आता है। कि रमन और उसके कुछ साथी सुबह के सैर सपाटे पर निकलते हैं। अगली सुबह तनु और उसकी परम मित्र सपना भी सुबह की सैर सपाटे पर निकलते हैं। वह ठंडी हवा बहुत हल्की होती है। तनु के अंदर एक नया उमंग भर देती है। उसे आनंद सा महसूस हो जाता है। मगर तनु को रमन से ही मिलना था। कई सारे पार्कों में झांकने के बाद तनु को रमन मिल जाता है। वह अपने साथियों के साथ व्यायाम कर रहा होता है।

तनु के अंदर फिर वही डर आ जाता है कि रमन उसे दिखेगा या नहीं वह रमन को भीड़ में देख लेती है मगर रमन अपने कसरत में मगरूर होता है वह तनु की और ध्यान भी नहीं देता है।

अपने ही क्लास के कुछ लड़के व्यायाम कर रहे हैं। सपना कहती है।

अभी तु लडकों को ही देख यहां हम व्यायाम करने आये हैं। यह लडकों को देख रही है। तनु डांटते हुऐ सपना से कहती है।

तनु पार्क के पास ही छोटा मोटा व्यायाम करने लगती है।

आस-पास के कई लड़के उसके व्यायाम करने के तरीके को देखकर हंस रहे होते हैं। उन्हीं समूह में से एक पहलवान शरीर में सूडोल व लंबा सा तनु के पास आता है। और तनु से कहता है क्या मैं तुम्हें व्यायाम सिखा दूँ? तनु उससे दुर हटते हुऐ कहती है। नहीं मुझे तुमसे कुछ सिखाने की कोई जरूरत नहीं है। फिर वह लडका कहता है। मैं यहां का सबसे अच्छा व्यायाम सिखाने वाला हूं आधे से ज्यादा लोग मुझे योग गुरु कहते हैं। तनु गुस्से में कहते है। अरे भाई नहीं सिखना तो नहीं सिखाना कोई जबरदस्ती है! क्या? इतनी सरे लोग है उनको जाकर सिखा और पार्क की दीवार पर लिख दे! फ्री में योगा सिखाया जाता है।

वह लडका सिर झुका के तनु के पास से चला जता है।

फिर रमन और उसके साथियों का व्यायाम खतम होता है।

तनु ! रमन को आवाज लगाती है।

रमन मुड़ता है और तनु को देखता है।

आज क्या बात है? आज तुम लोग यहां। पर कैसे घूम रहे हो?

रमन यह प्रसन्न तनु से वह दीपा से भी पूछता है।

अचानक एक काले रंग का वह ताकतवर कुत्ता तनु को सुघने लगता है। तनु डर के रमन की एक बगल से दूसरे बगल में उछलती है।

रमन उसे संभालने को कहता है। यह हम लोगों का ही कुत्ता है कोई नया सदस्य होता है तो उसे जरूर सुघंता है।

तभी व्यायाम करने वाले भैया कहते हैं।

अरे रमन यह भी तो बताइए कितना वफादार है?

हां भैया यह भी बता देता हूं। ईसका नाम मोती है। जो सामान्यतः सभी कुत्तों का रहता है।

सपना और तनु मोती को लाढ प्यार हैं।

अगले दिन भी तनु पार्क के बाहर झूठ का व्यायाम कर रही थी वह काला कुत्ता मोती भी कभी तनु के पास खेल रहा होता था तो कभी लड़कों के पास जाकर खेलने लगता था।

मगर अचानक एक पालतू बड़ा कुत्ता तनु की और भागता हुआ आता है। तनु कुछ समझ नहीं पाती है। वह तनु के पांव पर काटता है तनु छुड़ाने की पूरी कोशिश करती है। वह चिल्लाने भी लगती है। कभी वह मोती भी आता है। वह तनु को बचाने के लिए उसे कुत्ते पर हमला कर देता है। अब वह कुत्ता और मोती से घमासान लड़ाई

करने लगता है मगर मोती उसे पालतू कुते से नहीं लड़ पा रहा होता है खूब भोकने और चिल्लाने की आवाज सुनने के बाद रमन और उसके साथी दौड़कर आते हैं। कल जो लड़का तनु को व्यायाम सीखने के लिए कह रहा था और तनु ने उसे मना कर दिया था। उस लड़के का वह कुत्ता था। व्यायाम करने वाले भैया उस लड़के को पकड़ते हैं और उठा देते हैं।

तनु को बहुत दर्द महसूस हो रहा था वह शीशक-शीशक के अपने पांव को पकड़ के रो रही थी। रोने से ज्यादा डर रही थी। आसपास के लोग उसे डॉक्टर के पास ले जाने के लिए कह रहे थे। मगर प्रश्न यह भी उठ रहा था कि इस टाइम कौन से डॉक्टर की दुकान खुली होगी। तो उसमें से एक बंदा बताता है कि मेरे चाचा डॉक्टर हैं उनकी दुकान में जल्दी खुलवा सकता हूं। तभी रमन तनु को साइकिल पर बैठता है।

तनु के पैर से खून का रिसाब चालू था।

मगर आज तनु रमन को स्पर्श करती है, तनु रमन के कंधे पर हाथ रखती है और साइकिल पर बैठ जाती है।

घर में सब को पता चल जाएगा मुझे कुत्ते ने काटा है! और 14 इंजेक्शन भी तो पड़ेंगे ना । तनु घबराते हुए कहती है ।

नहीं नहीं अब तीन ही लगते हैं। रमन कहता है

पक्का है सच बोल रहा है ना तू मगर मम्मी को पता चल जाएगा तो वह तो जरूर मारेगी ।

रमन कहता है। अरे क्यों मारेगी तेरी मम्मी ?

मुझे कुत्ते ने काटा है। बुखार सा लग रहा है। अगर इंजेक्शन नहीं लगाऊंगी तो मैं कुत्ते जैसी हो जाऊंगी क्या ?

अरे ये सब कुछ भी नहीं होगा। मन में बहम क्यों पाल रही है ?

मेरे भाई को पता चल जाएगा मैं घर से इतनी दूर क्यों गई थी फिर ?

अगर डॉक्टर की क्लीनिक बंद रही तो फिर कहां लगाएंगे इंजेक्शन ?

पैसे हैं ना तेरे पर इंजेक्शन लगवाने के लिए मैं तो नहीं लाई हूं ₹1 भी

और पापा की सैलरी मिलने में अभी 5 दिन बाकी हैं।

खून नहीं रुख रहा है। खून की कमी भी हो गई तो।

रमन को एक जोर का घुसा मारते हुए। तनु कहती है।

मैं जिंदा हूं ना! मर गई क्या? तू जो मेरे सवालों का जवाब क्यों नहीं दे रहा है? कुछ बोलना नहीं तो मुझे लगेगा कि मैं मर गई।

मुझे कुत्ते ने काटा तुझे मजाक लग रहा है। रोते हुए कहती है।

मोती कैसा होगा ? मोती ने उसे बहुत मारा या उसने मोती को बहुत मारा?

मोती को भी इलाज के लेकर जाओगे ना?

इस दिन तनु स्कूल नहीं जा पाती है। आज रमन को भी पूरी क्लास में सन्नाटा बिखरा हुआ लगता है। आज वह खाली मन से कोई भी काम कर रहा होता है। क्लास में सभी बच्चे रमन से ही पूछते हैं कि तनु को कुत्ते ने कैसे काटा। रमन सभी का प्रश्नों का जवाब देने में असमर्थ था। तो सभी बच्चे तनु के घर जाने का विचार करते हैं। और वह जाते भी हैं सभी बच्चे आगे-आगे होते हैं रमन सबसे पीछे होता है।

तनु की मम्मी बाहर अपनी दुकान पर बैठी होती है। सभी बच्चों को बताती है कि तनु अंदर है। घर में तनु चाय बना रही होती है कानों में गाने चल रहे होते हैं। वह अपने मगन में थी। पीछे से सब उसे देख रहे होते हैं। तनु बर्तन में सब का प्रतिबिंब देख वह चौंक के पीछे देखती है। सभी की आंखें बड़ी हो चुकी थी। हमने सोचा था बेचारी परेशान होगी मगर वह तो यहां मौज कर रही है। अपने सभी साथियों व रमन को देखकर बहुत खुश और उत्साहित होती है। तनु सबको अपने कमरे में लेकर जाती है। कमरे का दृश्य बहुत ही अलग था। दीवार पर तरह-तरह के कपड़ों के डिजाइन चुपके थे कपड़े काटे थे कपड़े बना रहे थे और कई सारी डिजाइन पड़ी थी जिन पर तनु कम कर रही होती है। सभी बच्चे उन डिजाइनों को देखकर मनमोहन सी दुनिया में पहुंच जाते हैं।

रमन भी एक डिजाइन को बड़े ध्यान से देख रहा होता है।

तनु रमन के पीछे से जाती है और रमन से कहती है।

मुझे बहुत दर्द हो रहा है सहन नहीं कर पा रही हूं।

रमन उससे नज़रें झुका के माफी मांगता है।

मैं तुझे एक शर्त पर ही माफ करूंगी। तनु ऐसा कहती है फिर रमन पूछता है। वह शर्त क्या है? तनु लगंडाते हुए जाती है। और अपने अलमारी का दरवाजा खोलती है। अंदर एक बेहद ही सुंदर सा और अच्छे तरीके से पॉलिश्ड एक सूट होता है।

जिसे तनु रमन को पहनने को कहती है। दीपा कुछ नोटिस कर रही होती है उसे सारी चीज को बड़ी गौर से देख सुन और सोच रही होती है। काफी मन करने के बाद वह उसे शूट को पहनता हैं।

अगली सुबह। दीपा और सतीश वहीं घूम रहे होते हैं।

दीपा सतीश से कहती है।

सतीश मुझे लग रहा है रमन और तनु के बीच में कुछ चल रहा है।

सतीश उसे पूरे क्षेत्र में किसी को ढूंढ रहा होता है अपनी नजर चारों ओर घूमते हुए दीपा से पूछता है। क्या?

मैं पक्का विश्वास के तौर पर नहीं कह सकती मुझे ऐसा लग रहा है।

सतीश दीपा से पूछता है! क्या?

दीपा और सतीश उसे पार्क तक पहुंचाते हैं जहां रमन व्यायाम कर रहा होता है। मगर सतीश या किसी और को ही खोज रहा होता है। काफी तलाशने के बाद सतीश को उसका शिकार मिल जाता है।

उन लड़कों के पास खड़ा हो जाता है जिसने अपने कुते से तनु के ऊपर हमला करवाया था।

दीपा गौर से देखते हुए कहती है। हां यही वह लड़के हैं।

वह लड़के पहले अकड़ के खड़े होते हैं। और सतीश से बहस करने लग रहे होते हैं। मगर सतीश यहां समझने के लिए बिल्कुल भी नहीं आया था। उनका कुत्ता जो बगल में बहुत शोर मचा रहा होता है। कुत्ते की रस्सी को पकड़ता है। उस कुत्ते को हवा में पंखे की तरह जमीन पर तीन से चार बार घूम घूम के मारता है। शायद उसे कुत्ते की कहानी पूरी तरह से खत्म हो जाती है। बाकी लड़के भाग जाते हैं। मगर जिसे कुत्ता होता है सतीश उसको बहुत पूरी तरीके से पकड़ के रखा हुआ होता है। सतीश उसे इतना मारता है इतना मारता है कि पूरा हुजूम खड़ा हो जाता है। रमन और उसके साथी जो व्यायाम कर रहे होते हैं वह भी व्यायाम छोड़कर सतीश के पास आते हैं। मैं अभी सतीश का रौद्र रूप देखकर दंग हो जाते हैं।

अभी वह भैया आते हैं जिसे कल उसे लड़के को उठा लिया था। और जो रमन बाकी बच्चों को व्यायाम सीखना था वह बीच में आता है। सतीश को पकड़ते है और सतीश को शांत होने को कहता है। उनके लिए भी सतीश को रोकना बहुत ही कठिन था। अभी मस्कत के बाद सतीश शांत होता है।

और हंफता हुआ कहता है। इनको तो मैं कभी भी नहीं छोडूंगा।

रमन सतीश का रौद्र रूप देखकर और भी ज्यादा डर जाता है उसके मन में जिज्ञासा उठाती है आखिर सतीश है कौन और वह तनु के लिए इतना कुछ क्यों करता रहता है। तो वह अपने कक्षा के कुछ दोस्तों से भी पूछता है। फिर एक लड़का पूरी कहानी सुनाने को तैयार होता है।

कहानी कुछ साल और पीछे जाती है।

जहां सतीश एक अध्यापक के कक्ष में था। अध्यापक कॉपी क्रोध में था। माहौल बहुत ज्यादा गंभीरता। सतीश माफी की मुद्रा में बैठा हुआ था।

सर हाथ जोड़कर माफी मांग रहा हूं इस बात को यहीं तक रहने दो। सतीश अध्यापक से बोलता है।

तुम माफी मांग की कोई एहसान नहीं कर रहे हो तुम्हारे साथ के हर एक लड़के मुझसे माफी ही मांगोगे। अध्यापक बोलता है।

सबको लाने की क्या जरूरत है। जब बात आपकी और मेरे बीच की ही है।

अध्यापक उससे और चीड़ जाता है और उसे बाहर जाने को कहता है।

वह बाहर जाता है। क्लास के बाकी लड़के भी उससे पूछते हैं और सतीश उदास मन से कहता है। बात नहीं बनी है और भारी मुसीबत हम पर आने वाली है। तो सब कृपया संभल के रहना।

अगले दिन क्लास में एक महिला आती है उसके हाथ में कई सारे कागजात होते हैं। उसे महिला से वही अध्यापक मिलता है जो सतीश से लड़ रहा होता है।

अध्यापक उस औरत के कागज देखते हुए कहता है।

अब पक्का ना उसकी असली मां हो? मतलब सतीश की।

सतीश की मां बहुत मासूम और सीधी होती है। उसका पति भी काफी समय पहले गुजर चुका होता है। वह ही अकेली सतीश और उसकी बहन का लालन पोषण कर रही होती है।

प्रार्थना सभा में वह अध्यापक सतीश की मां को लेकर आता है। सतीश की मां गर्व से भरी हुई होती है। उसके बेटे नहीं कोई अच्छा काम किया होगा तभी मुझे यहां बुला रहे हैं। और मेरे बेटे के साथ मुझे भी सम्मानित किया जाएगा। अध्यापक सतीश की मां को बुलाता है।

अध्यापक सतीश को भी बुलाता है। सतीश अपने शर्ट के बटन को ठीक करता है। और अपने हाथ में पहने कड़े को उतार के रख देता है।

अध्यापक सतीश की मां से कहता है।

आपको घमंड है ना! कि आपका बेटा आपका बेटा बहुत ही लायक और पढ़ा लिखा हुआ है?

अध्यापक सतीश की मां के हाथ में एक कागज का टुकड़ा देता है जिसमें कई प्रश्न लिखे हुए होते हैं। उन प्रश्नों को सतीश की मां अब सतीश से पूछे।

सतीश की मां उसे पत्र को कांपते हुए पड़ती है।

उस पत्र में लिखें पहले प्रश्न सतीश से पूछता भी है। सतीश की आंखों में आंसू होते हैं। क्योंकि वह उस प्रश्न का उत्तर नहीं जानता और उसे प्रश्न का उत्तर दे भी नहीं सकता था। फिर उसकी मां दूसरा प्रश्न भी पूछती है। और अब सतीश कफी टूट जाता है और सर शर्म से झुका लेता है। वह अपनी गलतियों पर पश्चताप करता। वह यह सोच रहा था इसके बाद मेरे दोस्तों का क्या होगा। वह अपने दोस्तों को भीगे हुए आंखों से देखता है। उसके कई दोस्त मायूष थे मगर कई दोस्त उसे इशारा देकर तनु की ओर देखने को कह रहे थे। तनु की ओर नजर जाते ही सतीश की। तनु इशारे में कहती है क्या यार मुझे भी तो देख ले। इतने में उसकी मां तीसरा प्रश्न पूछ लेती है। तनु इशारे में सतीश को उसे प्रश्न का सही उत्तर बताती है। और सतीश इस बार सही उत्तर दे पता है। अब सतीश की मां की आंखों में एक चमक होता है और सतीश भी आत्मविश्वास ही भरने लगा रहा होता है। फिर उसकी मां आगे के प्रश्नों को पूछना जारी रखती है। और तनु सतीश को इशारे से सारे प्रश्नों का जवाब देती है। अध्यापक यह देखकर चौंक जाता है कि सतीश इन प्रश्नों का उत्तर सही-सही कैसे दे पा रहा है। जब अंतिम प्रश्न पूछ रही होती है उसकी मां तनु को भी देखती है कि तनु इशारे से इस सारे प्रश्नों का उत्तर बता रही होती है। अब सतीश की मां का मन बहुत हल्का और आनंदित हो जाता है।

तनु अपने साथियों के साथ लंच टाइम में गोल घेरा बनाकर खाना खा रही होती है। वह दीपा के लाऐ गए खाने का मजाक भी बना रही होती है। तभी पीछे से सतीश आता है।

सतीश तनु से कहता है।

तनु मैं तुझे बहुत कम जानता था मगर आज मैं तुझे पूरी तरह से जान गया हूं। इसके लिए धन्यवाद ।

तनु खाते हुए सतीश से कहती है।

अरे भाई तू! धन्यवाद मत बोल मुझे। मुझे तेरा धन्यवाद बोलना है। उसे अध्यापक को न जाने किस बात को लेकर मुझसे जलता भूनता रहता था। मुझे इसको सबक सिखाने का मौका तो चाहिए था। और तू वह मौका लेकर आ गया।

तनु दीपा की बनाई हुई सब्जी! सतीश को भेंट स्वरूप भेंट करती है।

सतीश उसे सब्जी को चखते हुए कहता है।

यह है तो कोफ्ते हैं। मैंने कई सालों पहले खाया था। और अब आज जाकर खा रहा हूं। बहुत सुंदर बना हुआ है।

बहुत तारीफ करता है और दीपा भी हल्का-हल्का मुस्कुरा रही होती है। अब दिन आने वाला था 15 अगस्त का! स्वतंत्रता दिवस का। तनु को भी कुछ जिला स्तर पर प्रस्तुत करने का सोच रही थी। तो वह स्कूल के कुछ बच्चों का चयन करती है। जिसमें एक सतीश भी होता है। उसे महिषासुर वध का प्रतिमा बनाना है।

महिषासुर वध की प्रतिमा।

तनु इस झांकी को कुछ इस तरीके से प्रस्तुत करना चाहती थी। जैसे सदियों पहले माता रानी ने महिषासुर का वध किया था जिसमें कार्तिकेय गणेश शिव जी और कई सारे देवी देवताओं भी माता रानी के साथ थे। फिर जब अंग्रेजों ने भारत पर राज किया था तो भारत माता भी अपनी कुछ शिष्यों के साथ मिलकर अंग्रेजों का वध करती है। अब तनु को यही बताना होता है कि दोनों प्रक्रिया एक जैसी थी।

तनु उन सभी बच्चों को संभाल नहीं पा रही थी। इसमें दीपा मां दुर्गा वह सतीश महिषासुर बना हुआ था। इस प्रकार की शोर-शरावा से बहुत परेशान हो चुका था। और वह देख रहा था तनु इन सब को संभालने की कोशिश कर रही है। मगर कोई भी संभल नहीं रहा है। फिर सतीश अपने स्थान पर से हटा है। फिर सबको धमका के एक साथ होने को कहता है।

सभी के मन में सन्नाटा घर कर लेता है तनु वह दीपा काफी प्रभावित होते हैं। दीपा कुछ ज्यादा। फिर तनु सबको सही तरीके से अपने-अपने स्थान पर खड़ा होने को बताती है।

फिर वह इस झांकी को मंच पर प्रस्तुत करते हैं। और यह झांकी यहां भी अब्बल नंबर पर होता है। प्रकार के विचार किसी के पास नहीं होते हैं।

इतनी बात को जानकर रमन के मन में सतीश को लेकर काफी इज्जत बढ़ जाती है।

रमन का एक साथी भी यह कहानी सुन रहा होता है।

आज 3 दिन के बाद तनु अपनी क्लास में प्रवेश करती है।

तनु को दीपा उसे अपने पास बैठने के लिए कहती है।

देख दीपा में यहां बैठ जाती। मगर मैं यहाँ नहीं बैठ सकती हूँ।

मुझे ना मेरे पैरों को आराम देना है यहां बैठेगी तो कभी तू बाहर निकलेगी तो मुझे उठाना पड़ेगा कभी सपना बाहर निकलेगी तो मुझे उठाना पड़ेगा। तुम दोनों ही मुझे परेशान करती रहोगी। तो कुछ दिन में पीछे बैठ जाती हूं। और कविता को यहाँ बैठने के लिए कहती है। (कविता क्लास की कम होशियार लड़की होती है। और उसका लेखन बहुत ही सुंदर होता है एकदम कंप्यूटर के जैसे लिखती है वह।) फिर तनु लंगड़ाते हुए क्लास के पीछे जाती है। और कविता से आगे बैठने को कहती है। कविता बहुत ही मासूम होती है और वह आगे जाकर बैठ जाती है। तनु पीछे भी रमन से अभी भी चार बच्चों के दूरी पर बैठी हुई थी। एकांत कोने में उसे काफी आराम महसूस हो रहा था। आराम से महसूस हो रहा था मगर पंखे की हवा वहां तक नहीं पहुंच पा रही थी। रमन से भी कुछ नहीं बोल रही थी और रमन भी अपनी ही धुन में था। आज तनु को पता चला रमन हमेशा खिड़की के पास क्यों बैठा करता था? क्योंकि खिड़की के पास एक ताजी हवा आती रहती थी। वहां बैठने की बहुत ही कोशिश करती है मगर उसे गर्मी बर्दाश्त नहीं हो रही होती है। आखिरकार वह रमन से बोल ही देती है।

रमन यहाँ गर्मी लग रही है। वहाँ आके बैठ सकती हूँ?

रमन अपने पास बैठने के लिए जगह बना देता है।

फिर तनु कहती है।

नहीं! नहीं! और उधर बिल्कुल खिड़की के पास।

रमन खिड़की वाली सीट भी छोड़ देता है। रमन और तनु अपने गणित के सवालों को हल कर रहे होते हैं। तभी अजय वहां पर आता है। और तनु से कुछ अपने प्रॉब्लम जाहिर करता है। तनु और रमन कुछ प्रॉब्लम को सॉल्व कर देते हैं।

अजय कहता है।

तनु रमन को ना तुम्हारी कहानी बता दी ! 15 अगस्त वाली।

क्या-क्या बताया? तनु कहती है।

सब कुछ बताया कि कैसे तू जीत गई।

तनु रमन की ओर मुंह घुमा के कहती है।

इन्होंने जो बताया ना वह मात्र 10 परसेंट था। मैं पूरी कहानी सुनआऊं तुझे।

रमन अपने भाव ना दिखाते हुए कहता है।

नहीं नहीं रहने दो।

फिर तनु रहमान को हिलाते हुए कहती है। थोड़ी सी कहानी है थोड़ी सी और सुन ले।

तनु आगे की कहानी आरंभ करती है।

एक बड़े से मैदान में बहुत बड़ा हम लगा हुआ था। सैकड़ो की संख्या में लोग बैठे हुए थे। तनु और उसकी टीम का बारी जल्दी ही आने वाला था। तुम इतनी बड़ी संख्या में लोगों को पहली बार देखी है और डर जाती है।

सतीश की पीछे से आवाज आती है।

तनु तुझे डर लग रहा है।

हां मुझे तो लग रहा है।

मुझे भी लग रहा है। सतीश कहता है।

फिर तनु कहती है। चल छोड़ देते हैं अगली बार कोशिश करेंगे।

अगली बार नंबर आएगा। या अगली बार तेरी आइडिया पर कोई तैयार होगा। अगर हम में से कोई तेरी आइडिया पर नकल कर लेंगे तो। इसलिए जो होगा जैसा होगा! जिस तरह का होगा! वह आज ही होगा।

यह देख कितनी सारे लोग हैं? दीपा कहती है।

यह जानता नहीं है। यह चुतिया है। यह वही देखना चाहते हैं जो यह देखते आ रहे हैं। यह लोग कुछ भी नया नहीं देख पा रहे हैं क्योंकि इनको कुछ नया दिख ही नहीं रहा है। और वह नया आईडिया तनु के पास है और वह आज मैं करूंगा।

इतने में तनु स्पीकर पर महिषासुर मर्दिनी बजा देती हैं।

वाह! वाह ! वाह ! रमन तनु की प्रशंसा करता है।

तुझे मेरी बातों पर भरोसा नहीं हो रहा है क्या? अगर नहीं हो रहा है ना तो एक बार जाकर सतीश से पूछ ले। तनु हंसते हुए कहती है।

तभी तनु के फोन पर एक मैसेज आता है। वह अपने फोन में देखने लगती है।

रमन उसके हाथ में फोन देखकर भौंचका रह जाता है।

तू फोन लेकर आई स्कूल में?

मुझे ना कई सारी जरूरी काम होते हैं और फोटो खींचनी होती है।

इसे लिए इसे लेकर आती हुँ। मगर छुपा कर रखती हूँ।

तनु उसे मैसेज को पढ़ने की कोशिश करती है। मगर वह पढ़ नहीं पाती है। तो वह रमन की ओर देखते हैं और रमन को उसे पढ़ने को कहती है। रमन उसे फोन को हाथ में लेने से भी मना कर देता है। तनु नरेश सर को देखते हैं और उनके पास लंगड़ाते-लंगड़ाते हुए जाती है और नरेश सर को रुकने को कहती है।

अरे मेरी तनु आज झगड़ते हुए कैसे। ठीक है ना पांव में चोट लगी है?

अरे नहीं सर थोड़ी सा छोटा सी एक्सीडेंट हो गया था।

मैसेज आया है जल्दी से पढ़ने क्या लिखा हुआ है।

मेरे पढ़ने का कोई फायदा नहीं हुआ। नरेश तनु को डांटे हुए कहता है।

अरे सर छोड़िए ना बताइए तो सही क्या लिखा हुआ है।

नरेश उसे मैसेज को पड़ता है। और तनु की और देखता है और फिर से पड़ता है कि मैं कुछ गलत तो नहीं पढ़ लिया है। अति आत्मविश्वास से तनु को बधाई देता है।

तनु भगवान को मानती है क्या?

हां जी सर मानती हूं।

तो भगवान को शुक्रिया बोल दे।

सर बताइए तो सही किस टाइप का मैसेज है।

सवा शेख ने तुझे बुलाया है। अपना एक दिन का टाइम तेरे लिए दिया है।

तनु की आंखें फट जाती है वह लंगड़ाते हुए उछलती है और एक दीवार का सहारा लेकर खड़ी हो जाती है।

नरेश तनु को फोन देकर चला जाता है। तनु फिर रमन के पास आती है। रमन को वह मैसेज दिखती है।

रमन दिलचस्पी न दिखाते हुए तनु से पूछता है।

वह सब तो ठीक है। मगर यह शवा शेख कौन है?

फिर तनु बताती है।

रमन में जिस तरह का सपना देख रही हूं। यह उसे सपने को पूरी तरह से जी चुकी है। फैशन की दुनिया का सबसे बेमिशाल चेहरा है यह। यह अपने हर कपड़े में एक संदेश छुपा देती है।

और यह खूबी मेरे पास भी है। रमन मेरा मात्र एक ही सपना है इसके बाद मेरा कुछ भी नहीं है। मुझे इस सपने को पूरा करना है।

फिर रमन गहरी सांस लेता है और छोड़ता है तनु की ओर देखते हुए बोलता है।

तनु सारे सपने पूरे जरूर होंगे मगर समय के बाद। अभी आप अपनी परीक्षा में ध्यान दो। जो समय अब आने वाला है। इसके बाद एक और समय आएगा उसे समय में हम इस शवा शेख भी जाकर मिलेंगे। और एक बात। हम जिस परीक्षा का समय का इंतजार कर रहे हैं उसे परीक्षा के लिए 2 साल तक इंतजार किया है।

और मैन इस समय के लिए 10 साल से इंतजार किया है

तनु कहती है।

रमन ने तनु की आंखों में एक बगावत की झलक देख ली थी। तनु को लगता है। रमन एक तरह से ना ही बोल रहा हैं। मगर जिस समय शवा शेख तनु से मिलना चाह रहे होती है। इस समय में तनु का परीक्षा भी आरंभ होने वाला था।

तनु उदास हो जाती है। और रमन के हां से हां मिलती है। अभी वह रमन के बगल में ही बैठी होती है। वह अब और भी उदास होने लगती है। रमन उसका मन बहलाने के लिए एक गणित का सवाल

हल करने के लिए देता है। मगर तनु किताब को झट से बंद कर देती है और रमन के पास से उठकर लंगड़ाते हुए बाहर चली जाती है। वह बाहर रोने लगती है।

इसका एक आंसू झलकता हुआ जमीन पर आकर गिरता है।

आसमान से एक बूंद बरसात का पानी आता है और तनु के आँसू को अपने में समा कर देता है।

अगली सुबह तनु और रमन के शहर में मूसलाधार वर्षा हो रही होती है। उसके आसपास के कई गांव डूब चुके होते हैं। सरकार घर से बाहर निकलने को मना कर देती है कई सारे स्कूल कॉलेज बंद करने के आदेश आते हैं। राज्य के कई सारे परीक्षाओं को भी रद्द कर दिए गए थे।

तभी रमन के घर में फोन की घंटी बजती है।

रमन फोन उठाता है। और फोन के पीछे से आवाज आती है

अब परीक्षा का समय तो खत्म हो चुका है अब तो मेरे साथ दे दे।

रमन इस आवाज को सुनकर हंसने लगता है।

फोन के पीछे तनु की आवाज होती है।

अब हंस क्यों रहा है यह भी तो बताना। तनु कहती है।

हां ठीक है चलते हैं?

कब?

अब यह तो तू बताना कब चलना है?

देख मन कर भी तो चलना है यही मौका है मुझे खास तौर पर यही मौका भगवान ने दिया है वरना परीक्षा जल्दी हो जाती।

तनु कहती है।

रेलवे स्टेशन पर। पूरे रेलवे स्टेशन पर बरसात की मनमोहक दृश्य को देखा जा सकता था। कई सारे लोग स्टेशन पर बैठकर अपनी आने वाली रेलगाड़ी का इंतजार कर रहे थे। और स्टेशन पर हर प्रकार की आने जाने वाली गाड़ी का प्रचार हो रहा था। उधर एक प्लेटफार्म पर तनु अपने बैग के साथ खड़ी होती है। किसी का इंतजार कर रही होगी। तनु बहुत खुश थी वह गानों के तराने पर हल्का-हल्का मचल रही थी। वह देखती है कि स्टेशन के एक किनारे पर रमन अकेला खड़ा होता है। और भाई तेजी से उसके पास जाती है।

सामान कहां है? तेरा।

मिट्टी की तरह खामोश रहता है। वह कुछ नहीं बोल पाता है।

अरे बता तो सही तेरा सामान कहाँ है?

मैं तैयार था मगर हम सारे NCC वालें। बाढ़ प्रभावित लोगों की मदद करने के लिए जा रहे हैं। मैं यहां किसी को रोकने के लिए नहीं (रमन की जुबान कुछ समय के लिए बंद सी पड़ जाती है) आया हूं!

तनु यहां बहुत ही ज्यादा परेशान वह क्रोधित हो जाती है!

तू क्या मुझे यहाँ अब कोई भी नहीं रोक सकता।

तनु एक घमंड वाले लहजे में रमन से कहती है।

सुन रमन मेरी एक बात को सुन ! तू जो काम करने जा रहा है सच में वह अच्छा तो है। तेरे किसी काम का नहीं होगा। तुझे लोग जानेंगे भी नहीं। तू अपनी ऊर्जा को बिना मतलब में बर्बाद करने के लिए जा रहा है। अगर यह कोई तेरा बहाना है।

तो मैं टिकट के पैसे दे सकती हूँ।और मेरे साथ चल सामान भी मिल जाएगा तुझे। इतनी तो बचत मैंने करी है।

रमन धीमी से आवाज में कहता है।

तनु कुछ भी हो मेरे लिए सबसे पहले समाज सेवा ही होगा।

हर एक बंदे की अपनी-अपनी राय होती है।

कुछ नहीं रखा इस समाज में।। नकली लोगों की नकली समाज है यह। यह बस आपको आपका काम करने से रोकना चाहती है।

तनु के इतने कटु शब्द सुन के रमन कहता है।

हां मुझे पता है यह समाज कैसा है। इसी समाज ने मेरी बहन को मुझे छीना है। यही समाज मेरी मां को पागल भी कहता है।

यही समाज मेरे पिता से मजदूरी करवाता है। इस समाज को मैं इस समाज के नजर से ना देख कर मैं मानवता की नजर से देखूंगा। मैं इस समाज से अलग हूँ मैं तेरे साथ खड़ा हूं। मगर तनु मेरी एक ही

खुशी है उसे मैं पूरा करूँगा। तेरी खुशी तू खुद ब खुद पूरा कर लेगी। नमक्कल की क्या जरूरत है। मुझे पक्का यकीन है तू वहां से जीत के आएगी। मेरे लिए बस तू आ जाना।

फिर तनु रमन से हाथ मिलाती है और एक दूसरे को अलविदा कहते हैं।

रमन कुछ भी नहीं बोल पाता है। उसकी ट्रेन आती है। जब तक रमन धनु की आंखों में देख रहा होता है। तनु खुद को बंद के रखी हुई होती है। वह अपने जज्बात झाहिर नहीं होना देना चाह रही थी। मगर जैसे ही रमन तनु की आंखों से ओझल होता है। वह फूट-फूट के रोने लगती हैं। वह खुद को रोक नहीं पा रही थी।

वह अपनी बैग को जबरदस्ती सीट के नीचे घुस आती है। जब वह नहीं घुसता है तो लात मार मार के घुस आती है। इससे सब पता चलता है तनु बहुत क्रोधित भी थी।

मगर उसके सामने वाले सीट पर कोई और भी बैठा था। होता है नरेश।

तनु जो सफर में आगे निकल चुकी थी। वह मन ही मन खुश हो रही थी वह भगवान को शुक्रिया भी कर रही थी। उसे वर्षा के लिए। जिसने परीक्षा रुकवा दी थी। मगर अब उसके मन में एक घमंड भी आ जाता है । दूर गाँव में N. D. R. F. की टीम जा रही होती है इस टीम में से एक रमन भी होता है। उसे टीम का मनोबल बढ़ाने के लिए एक व्यक्ति मंच पर चढ़ता है।

और लड़कों तुम सब की आने की मुझे कोई खुशी नहीं है। क्योंकि हम लोग का दुख से उभारते हैं। और फिर हम गायब हो जाते हैं। और बस एक ही नाम रह जाता है। NDRF

मगर इस बार कई सारे स्कूल के बच्चे भी हमारे साथ में हैं।

Thanks to NCC

मैं बस एक यही शब्द कहना चाहूँगा जो भी बाढ़ में फंसे हैं जान उनका भी है। और जो हम उन्हें बचाने जाएंगे जान हमारा भी है। मगर हमारी जान से पहले हमारा फर्ज आता है।

और हमें अपना फर्ज निभाना है। फिर जान बचाना है।

फिर सभी अपनी अपनी टीम में अपने-अपने फर्ज अदा करने के लिए चलते हैं।

कुछ लड़के अपनी कश्ती में खाने का सामान भर रहे थे खाने के समान पर एक नाम लिखा होता है वह उसे पढ़ रहे होते हैं।

फिर सभी लोग अपनी अपनी जिम्मेदारी निभाने लगते हैं। उस जगह काफी भयानक त्रासदी फैली हुई थी। हर जगह विनाश ही दिख रहा था। दूर तक पानी और पानी से फैली हुई विनाश का साया मंडरा रहा था। मौत का तांडव अभी भी नाच रहा था। लोग अभी भी डरे हुए थे बचाव कर्मी भी बच्ची के काम कर रहे थे क्योंकि बाढ़ द्वारा आने वाली थी। धीरे-धीरे बहते हुए हवा तेज हो जाती है। आंधी का विकराल रूप ले लेती है। और जो लोग बचाने के लिए गए थे।

उनके भी प्राण खतरे में आने लगे थे। सभी लोग एक सुरक्षित जगह पर जाने की कोशिश कर रहे थे मगर वह विफल हो रहे थे।

तब भी कई सारी टीम लोगों की जान बचा रही होती है। उसी में से एक टीम में रमन भी होता है। रमन जी गाँव में होता है उस गाँव का नाम महादेवगढ़ होता है। हां मुझे पता है तुम लोग क्या सोच रहे हो। वह आँधी धीरे-धीरे रमन की ओर भी बढ़ रही होती है। रमन और उसके साथी एक पेड़ से अपनी नाव को बंद लेते हैं। वह आधी उसे नाव को और तीर से हिलाने लगा रहा होता है।। रमन अपनी रशियों को उलझा रहा होता है।

एक झटके में वह पानी के अंदर होता है। रमन एक अच्छा तरह तो होता ही है। मगर वह गहराई में जाने से खुद को नहीं रोक पा रहा था। रसिया रमन से उलझी जा रह होती है। उसके सामने एक मृत्यु शरीर आता है, इसे देखकर रमन डर जाता है। वह मृत आदमी एक बक्सा पकड़ रखा होता है। यह वही बक्सा होता है इसमें गणेश अपनी सारी रचनाएँ समेट कर रख रहा होता है। और जो उसे बक्से को पकड़ चुका था वह गणेश ही होता है। अर्थात गणेश अपनी माँ और रचना को बचाने के लिए मृत्यु को गले लगा लेता है। रमन गणेश के चेहरे की शांति में हो जाता है, वह बिल्कुल शांत हो चुका था। उसके अंदर किसी प्रकार की मोह माया की छवि नहीं दिख रही होती है। रमन उसको छूना चाहता है मगर तभी उसके पाँव में एक हिसाब से महसूस होता है। सभी लड़के ऊपर से रमन को खींच रहे होते हैं। रमन गणेश को भी पकड़ के ऊपर की ओर खींचना

चाहता है। तभी वह बक्सा नीचे गहराइयों को छोड़ ऊपर आसमान की ओर चला जाता है। और गणेश गहराइयों में धीरे-धीरे समा जाता है। रमन भी उसे बक्से के सारे ऊपर निकलता है।

तनु अपने सपनों की दुनिया में

इसी दौरान तनु भी एक रेलवे स्टेशन पर उतरती है। यहाँ भी बरसात छम छम छम हो रह होती है। सभी भाग-दौड़ में एक दूसरे को धक्का मार रहे होते हैं। इस स्टेशन पर कुछ लोग समय को दारू और धुएं में उड़ा रहे होते हैं, जैसे उन्हें किसी चीज की चिंता ही ना हो क्योंकि इस शहर में सभी लोगों के सपने पूरे होते हैं। नरेश भी काफी खुश था। क्योंकि नरेश पहले भी यहाँ आ चुका था। तन इस तरह की भीड़ को देख डर जाती है। उसे इस प्रकार के भीड़ की कोई आदत नहीं होती है।

तनु डरने की कोई बात नहीं है, बाहर हमारी गाड़ी इंतजार कर रही है।

तू जो पहले इतना बोला करती थी, अभी उसकी बोली एकदम बंद हो चुकी थी। वह दोनों स्टेशन से बाहर निकलते हैं तो उन्हें वह ड्राइवर जिसे पहले से जानता था। नरेश को वह ड्राइवर के इशारे से बुलाता है।

महादेवगढ़ में रमन अपने शिविर में उस बक्से के साथ बैठा होता है। फिर रमन का एक साथी एक हथोड़ा लेकर आता है।

सब खामोश मगर उत्तेजित थे। इस बक्से को तोड़ने के बाद हमें क्या मिलेगा। कुछ को लगा कि किसी के घर के पुराने कपड़े ही होंगे। और कुछ बोल रहे थे क्या पता उन कपड़ों में कुछ खजाना छिपा हो। वह लोग फिर उसे ताले को तोड़ते हैं।

सब उसे ताले को तोड़ने के बाद बक्से को खोलते हैं और उसे बक्से में एक अच्छे ढंग से बंद कर गई किताबों को खोलते हैं।

सबके मन में जो उत्तेजना थी, वह उदासीपन में छा गई।

सबने अपना मुँह बना लिया उन पुरानी कॉपियों को देखकर।

सब उसे जगह से जाने लगते हैं। फिर रमन उन कॉपियों को खोलना है और उनके अंदर लिखे सामग्रियों को पढ़ता है।

फिर तनु और नरेश जी गाड़ी में बैठे थे, वह एक टॉवर के नीचे आकर रुकती है। उस टॉवर में कई सारे लोग होते हैं और कई प्रकार की कंपनियाँ चल रह होती हैं। फिर तनु उस स्टूडियो में पहुँचती हैं। वहाँ कई सारे लड़के हुए लड़कियों की भीड़ होती है। कुछ सीढ़ियों के बाहर बैठ अपना इंतजार कर रहे होते हैं। मगर तनु और नरेश उनको पीछे छोड़ते हुए स्टूडियो के अंदर चले जाते हैं। क्योंकि तनु को खास तौर पर बुलाया गया होता है, इस बात का उसके अंदर घमंड भी होता है। काफी शाम हो चुकी थी। कुछ देर में सूरज ढलने वाला होता है। उनसे एक अच्छे मेहमान की तरह व्यवहार किया जा रहा था। तनु को सब अच्छा लग रहा था। तभी कमरे में से एक मोटा तोंद वाला आदमी बाहर आता है। वह नरेश को देख खुश होता है।

और नरेश और वह आदमी आपस में कुछ बात कर रहे होते हैं।

जब नरेश तनु के पास आकर बैठता है। तनु नरेश से पूछती है।

यह मोटा आदमी कौन था?

नरेश कहता है। इस आदमी को नहीं जानती हो। इससे मिलने के लिए ही तो तुम आई हो इसीलिए तो तुम्हें बुलाया है।

तनु कुछ समझ नहीं पाती है और फिर नरेश से पूछती है

क्या यह है। सवा शेख है?

नरेश हँस के कहता है अरे हाँ यही है वह व्यक्ति जिसने तुम्हें बुलाया है।

अरे सर बहुत एक औरत है।

फिर नरेश तनु को पूरी बात समझता है। हाँ मुझे भी पता है वह एक औरत थी। इस आदमी ने उसका पूरा नाम और सर पहचान खरीद लिया है। शबा शेख इस दुनिया में अब कोई नहीं है। वह इस दुनिया को छोड़कर चली गई है, अब यह आदमी उसके नाम को सँभाले हुए रखा हुआ है।

यह लगा तनु को पहला धक्का। फिर वहाँ से जब सभी लड़के व लड़कियाँ चले जाते हैं तो वह आदमी तनु को बुलाता है।

वहाँ पर दो-चार लड़के और होते हैं जो उसे मोटे आदमी का शागिर्द होता है। वह आदमी तनु को अपने पास बैठाता है। और उसे हाथ मिलाता है। और पकड़े हुए रहता है कभी एक हाथ से तो कभी दो

हाथ से वह तनु के मुलायम हाथ को पकड़े हुए रहता है। इसी बीच वह नरेश अथवा सभी से बात भी कर रहा होता है। जिसमें वह तनु के बनाए गए डिजाइन की तारीफ ही करता है।

वह आदमी कहता है। इस कोमल हाथ से इतने अच्छे डिजाइन बनाए गए हैं।

फिर कुछ समय सहलाने के बाद वह तनु के हाथ को छोड़ देता है।

उसके बाद फिर तनु के बनाए गए डिजाइन वाले कपड़े भी बाहर निकलवा लेता है। वह उन कपड़ों को हाथ से छू छू कर देखने लगता है। इसी बीच तनु ने जो कपड़े पहन रखे थे वह आदमी उसे भी जूता है पांव की एड़ी से लेकर जाँघ तक।

फिर उसे आदमी का एक सहागीर्द कपड़े को लेकर उसे मोटे आदमी के पास जाता है।

देखो कपड़े देखने से अच्छा नहीं लगता है इसे पहनना भी पड़ेगा।

मोटा आदमी मजाक में उसे कहता है इस कपड़े को तुम ही पहनो। वह जाता है उन कपड़ों को पहन के आता है वह बड़ा अजीब ढंग से पहन रखा था। जैसे की तनु के कपड़े की बेइज्जती कर रहा हो।

फिर तनु उसे डाँटती है और कहती है। तुम नौकर हो और तुम्हारी बुद्धि नौकरों वाली ही रहेगी क्या तुम्हें कपड़े पहनने का ढंग नहीं आता।

वह आदमी तनु को चुनौती देते हुए कहता है।

हाँ मैं नौकर हूँ तुम ही इस कपड़े को पहनो कैसे पहना जाता है।

तनु दनदनाते हुए अपने कपड़े लेती है और एक कक्ष में जाती है। फिर वह मोटा आदमी अपने फोन में कुछ देखने लगता है। और कुछ देर बाद अपने बनाए कपड़े पहन कर आती है। सभी उसे देख दंग रह जाते हैं। और सभी तनु के बने कपड़े की बहुत तारीफ कर रहे होते हैं। इस वक्त सबके लिए खाने वह पीने का सामान भी आता है। उसे सामान में तनु के लिए खाना नहीं होता है। इसमें माँस-मदिरा ही होता है। फिर तनु के लिए अलग से खाना आता है।

वह मोटा आदमी कहता है। आप इस खाने को ले जाए अपने कक्ष में खाना खाए और अथवा दूसरे कपड़े पहनकर आओ।

फिर तनु जाती है। इधर सब अपना माँस-मदिरा का सेवन कर रहे होते हैं जिसमें नरेश भी माँस का स्वाद ले रहा होता है। अब काफी देर हो चुकी होती है तनु नहीं निकल रही होती है। फिर एक लड़का जाता है दरवाजा खटखटाता है दरवाजा नहीं खुलता है। अब माहौल काफी गंभीर हो चुका था सबके मन में किसी प्रकार का लालच घर कर जाता है। फिर नरेश उठता है और उसे दरवाजे को खोलने की कोशिश करता है। अबकी बार भी दरवाजा नहीं खुलता है। वह मोटा आदमी अपने फोन में फिर से कुछ देखा है और अपने सीट पर से उठता है। अपने कपड़े झाड़ता है।और तनु के कक्ष की ओर बढ़ता है। जो दरवाजा किसी से नहीं खुलता है उसे दरवाजा किसी से नहीं खुलता वह उस मोटे आदमी से खुल जाता है। दरवाजे वह चौखट

के बीच में एक भाग खुला हुआ रहता है उसे भाग से देखा जाए तो तनु बेहोश थी अंदर।

वह आदमी अंदर जाता है और अंदर से दरवाजा बंद कर लेता है। और सभी बाहर माँस-मदिरा का सेवन कर रहे होते हैं।

कुछ समय पश्चात वह दरवाजा फिर खुलता है। वह मोटा आदमी अपने कपड़े सही करते हुए बाहर निकलता है। जिससे यह प्रतीत होता है कि कमरे में बंद तनु के साथ बलात्कार हो रहा होता है। पल-पल करके ऐसे ही सब व्यक्ति अंदर जा रहे होते हैं और बाहर आ रहे होते हैं। और सबसे आखिर में नरेश जाता है। फिर हमें यह पता भी चलता है कि नरेश इसी प्रकार लड़कियों को बाहला फूंसला कर के सौदेबाजी करता हुआ आया है। नरेश के इस सौदेबाजी को लेकर वह मोटा आदमी उसे कई प्रकार के इनाम भी देता था।

बाढ़ में बरसात की हालत की सुधारते ही आनन-फानन में सारी परीक्षाएं आरंभ करवाई जाती हैं। रमन की क्लास की परीक्षा दे रही होती है। उसमें कुछ अधूरा-अधूरा महसूस हो रहा था। क्लास की एक पंक्ति से एक रोल नंबर गायब था। वह रोल नंबर तनु का होता है। परीक्षा हिंदी का होता है उनका परीक्षा एक हिंदी के विद्वान ले रहे होते हैं।

वह शिक्षक घड़ी दर घड़ी रमन को देख रहे होते हैं कि रमन जो दरवाजे पर किसी का इंतजार कर रहा होता है। वह रमन को डांटे हुए कहता है।

मूर्ख धूर्त क्या घड़ी-घड़ी दरवाजे की चौखट को निहारता है जैसे कोई प्रकट होगा और तुम्हें नकल करवाएगा।

रमन गुस्से से उस अध्यापक को देखता है और एक गहरी साँस लेकर छोड़ देता है और शिक्षक को इस निगाहों से देखा है जैसे उसे मार देगा। रमन जवाब देता है।

सर! जरा तमीज से।

कुकुर तुम हमें तमीज सिखाओगे।

रमन के पीछे एक लड़की बैठी होती है साधना।

सर इसमें एग्जाम सीट पूरी कर दी है।

शिक्षक उठता है और रमन से वह कागज लेता है। और देखता है कि रमन के सारे उत्तर सही होते हैं। रविकांत देखता है कि रमन के लेखन का तरीका बहुत हद तक जाना-पहचाना सा होता है। रविकांत के पूछने के उपरांत रमन अपनी एग्जाम कॉपी देकर बाहर चला जाता है।

रमन शांत था वह इस उधेड़बुन में था कि तनु कई दिनों से उसे दिखी नहीं है। रमन जब भी बेचैन हो जाता था तो वह गणेश के बक्से को खोल देता है और उसे निकाल के नयी कहानी पढ़ने लगता है। रमन अपने आपको शांत करने के लिए गणेश की लिखी हुई पुस्तकों को पड़ता है। कई सारी कहानियाँ अभी भी कागजों के रूप में बिक्री हुई होती है।

तनु की दो सहेली दीपा और सपना तनु के घर का दरवाजा खटखटाते हैं। तनु की माँ जाकर दरवाजा खोलती है। वह उन दोनों लड़कियों को देख सहम जाती है। और उन दो लड़कियों के प्रश्नों का उत्तर पूछने के लिए खुद को तैयार करती है। उसकी माँ की आँखें काफी लाल होती है जैसे वो रो रही थी। उसकी माँ चेहरे पर झूठी हँसी लेकर आती है और उन लड़कियों से बात करती है।

हाँ बेटी दीपा क्या बात है?

चाची तनु कहाँ है आजकल?

तनु की माँ लड़खड़ाते हुए जवान से आवाज निकाल के दीप से कहती है।

वह अभी अपनी दादी के घर पर है कुछ दिनों में उसकी शादी होने वाली है।

सपना पूरी बात को खत्म नहीं होने देती है और बीच में बोल पड़ती है।

चाचा उसके तो एग्जाम चल रहें हैं अभी।

देखो बेटा सपना वह शादी के बाद अपना एग्जाम देगी।

तुम दोनों उसकी पक्की सहेली हो तो तुम्हें भी उसकी दादी के घर चलना होगा।

दीपा तनु की मम्मी को नमस्कार कर वापस मुड़ जाती है।

वह दोनों आपस में कुछ बात करने लगते है। तभी सपना को एक बात ध्यान आता है।

दीपा तुझे पता है तनु ने अपने घर में एक गुप्त दरवाजा भी बना रखा होता है। सपना यह बात दीपा को बताती है।

और वह दोनों उसे दरवाजे के पास जाते हैं। मगर उसे दरवाजे को भी बंद कर दिया गया होता है। अब दोनों गहन चिंता में होते हैं तनु है तो है कहाँ? तभी सपना उसे दरवाजे को बड़े ध्यान से देख रही होती है। दरवाजे की एक चीज से वह तनु को साफ-साफ देख पा रही होती है। तनु अपने घर के एक कोने में जमीन पर बेहतास बैठी हुई होती है। वह काली पड़ चुकी होती है अब वह तनु के जैसी नहीं दिख रही थी।

सपना के बाद दीपा तनु को देखती हैं। उन दोनों को कुछ समझ नहीं आ रहा था आखिर तनु के साथ हुआ क्या है?

जहाँ सभी बच्चों की परीक्षा चल रही होती है उसे स्कूल में रमन एक ऊँचे स्थान पर खड़ा होता है। जहाँ से वह स्कूल में आने-जाने वाले बच्चों को देख सके क्योंकि उसकी आँखें तनु को खोज रही होती हैं। तभी सपना आती है वह दीपा के पास जाती है। दोनों फिर आपस में कुछ मायूष भरी बातें करने लगते हैं। तभी दीपा रमन की ओर देखते हैं और रमन भी उन दोनों को ही देख रहा होता है अब रमन को लगता है दीपा और सपना को सच में कुछ तो पता है।

तभी रमन पीछे वही हिंदी के अध्यापक रविकांत आ जाते हैं।

रविकांत रमन से कहता है।

आप महादेवगढ़ में गए थे न बाढ़ के समय?

जी सर मैं गया था।

मैं भी कुछ समय महादेवगढ़ में दिया था। वहाँ के लोग बहुत अच्छे और नेकदिल थे। वह गाँव सुंदर भी बहुत था।

जी सर गाँव की रचना को देखकर मुझे तो लगता है कि वह गाँव बहुत ही सुंदर रहा होगा।

रविकांत कुछ सोचता हुआ वहाँ से जाने लगता है। फिर वह मुड़ता है और रमन से पूछता है। मुझे तुम्हारी हरकत मेरे एक छात्र गणेश से मिलती-जुलती है।

रमन को अभी किसी भी चीज का होश नहीं होता है। वह जैसे मोह माया से बंद चुका था। अ उसे सिर्फ तनु को ही देखना था। वह अपने आपको बिल्कुल भी रोक नहीं पा रहा था हर जगह वाह तनु को ही खोजता राहता था। रमन रविकांत की बातों पर भी ध्यान नहीं देता है।

परीक्षा के बाद रमन का एकाएक उस और बढ़ने लगा जी और तनु रहती है। वह तनु को देखना चाहता था। वह दूर से ही तनु के दरवाजे पर नजर गाढ़ देता है। और रमन उसे दरवाजे की एक ओर से दूसरी ओर चला जाता है मगर उसे तब भी तनु नहीं दिखती है। वह खुद को हताश मान रहा था।

वह घर जाकर अपनी माँ के द्वारा बनाए गए सब्जी को लेकर लड़ने लगता है। वह चिड़चिड़ा हो जाता है। मगर तब भी वह उसे ही खोजता है।

आज के दिन सपना और दीपा आपस में बात कर रहे होते हैं।

रमन उनके बीच आज धमकता है और उनसे बात करने लगता है। बातों को घूमाते-घूमाते अंत में वह पूछ ही लेता है।

अच्छा सपना तो तुम्हारी सहेली व तनु कहाँ है?

हमें अगर कुछ पता होता ना तो आज हमारे साथ होती।

ऐसा सपना रहती है और सपना के तुरंत बाद दीपा भी बोलती है।

रमन उसके लिए शादी लगने वाली है वह अपनी दादी के घर में है।

रमन एक पल के लिए झटका खा जाता है। उसकी सारी दुनिया ही बिखर जाती है। अंदर-अंदर रोता है और मुस्कुराता हुआ दीपा से पूछता है।

अरे यार उसकी शादी हो रही है। इतना कहते ही रमन की होंठ लड़खड़ाने लगते हैं। वह लड़खड़ाते-लड़खड़ाते आखिर रो ही देता है। फिर दीपा उसे एक जगह बैठने के लिए कहती है।

रमन के आँखों सै आँसू रुक ही नहीं रहा था वह जांघो के बीच अपने सर को छुपा के रो रहा होता है। रविकांत उसके पीछे एकदम से आ जाता है। रविकांत उसे उठते है और उससे पूछता है।

क्या हुआ मेरे बच्चे तुम ऐसे क्यों?   रो रहे हो?

किसी के पास कोई जवाब नहीं होता है। रमन के आँसू थमथे ही नहीं। रविकांत उन लड़कियों से भी पूछता है आखिर क्या बात है? रमन रोते-रोते बेहोश हो जाता है।

तनु अपनी पंक्ति में बैठी होती है। खुद के भी प्रश्नों के उत्तर लिख रही होती है और औरों को भी बता रही होती है। उसे परीक्षा लेने वाले अध्यापक से कई बार डाँट भी पड़ती है। और रमन अपने ही प्रश्नों में सुलझा हुआ होता है। तभी तनु उसके पास आकर अपनी चित्रकलाएं दिखती है। और रमन उसे देखकर खुश होता है। तनु भी उसे देखकर खुश होती है।

फिर माहौल धीरे-धीरे गंभीर होने लगता है। तनु गले फाड़कर वह रमन की गर्दन पकड़ के रोने लगती है। उसकी आँखों से खून बहने लगता है।

फिर रमन अचानक से अपने घर के बिस्तर पर उठता है। जब रमन को होश आता है तो वह घर में होता है। उसके बगल में उसकी माँ होती है। और बिल्कुल सामने रविकांत से एक कुर्सी पर बैठकर गणेश की सारी रचनाएं पढ़ रहे होते हैं।

गणेश खुद को सहारा लेते हुए उठाता है और सर से बातें करता है।

सर आप मेरे घर पर क्या कर रहे हैं।

रविकांत रमन की मम्मी को बाहर जाने के लिए कहते हैं।

और रमन के पास आकर उनसे धीरे से कहते हैं। जब तुम बेहोश थे तो तुमने अपने बारे में सब कुछ बता दिया।

और तुमने मेरी सबसे प्यारी छात्र की ज्ञान को भी अपने पास ही रखा है।

रमन रविकांत से कहता है।

सर यह रचनाएं? यह तो सर! बाढ़ में बचाने के लिए गया था तो मुझे मिला है। तुम्हें पता है जिसने इसकी रचना किया है उसे भगवान का आशीर्वाद था। जब तुम इन रचनाओं पर ध्यान देते होंगे तो तुम्हें एक सुखद शांति महसूस होती होगी।

रमन सिर हिला के 'हाँ' कहता है।

जब मैं इन रचनाओं को पढ़ा था ना तो मुझे अपनी जिंदगी का एक लक्ष्य दिख गया था। एक बात और बताओ। यह तनु कौन है?

अगर देखा जाए तो गणेश की रचनाओं पर अब रमन का ही अधिकार था। तो रमन और रविकांत एक प्रकाशक के पास जाते हैं। वह प्रकाशक भी काफी समय से बुक प्रकाशित करते हुए आ रहे थे। और समाज में उनका एक गहरा पकड़ भी था।

और खास बात यह थी कि रविकांत उनके साथ पहले भी काम कर चुका था। जब उसे प्रकाशक को रमन द्वारा गणेश की कुछ रचनाएं दी जाती है। वह प्रकाशक और रविकांत आपस में कुछ बातें कर रहे होते हैं। रमन प्रकाशित कुछ पत्रिकाएं देख रहा होता है। जिसे वह प्रकाशक अभी बाजार में उतारने वाला था। रमन देखा है। एक मासिक पत्रिका में तनु का एक डिजाइन छप रहा होता है। रमन उस पत्रिका को हाथ में लेता है और बड़े ध्यान से पढ़ने लगता है। उसे

पूरी पत्रिका में कहीं भी तनु का नाम नहीं होता है। तू है।उस प्रकाशक से पूछता है। इसमें कहीं भी तनु का नाम क्यों नहीं है। रविकांत रमन की इस बात से सर झुका के सोचने लगता है। यह फिर तनु तनु करने लगा। मगर प्रकाशक बड़े अच्छे लहजे में रमन से बात करते हुए कहता है।

बच्चे यह डिजाइन शवा शेख द्वारा निर्मित है। तो इसमें तुम्हारी तनु का नाम क्यों हो सकता है।

क्योंकि सर इस डिजाइन को तनु ने ही बनाया था। यह देखो सर मैं दिखाता हूँ।

रमन इतना कहते ही अपने फोन में तनु का सोशल मीडिया साइट खोलने लगता है। वह देखता है कि तनु किसी भी सोशल मीडिया पर उपलब्ध नहीं थी। उसके सारे पेज सोशल मीडिया पर से हटा दिए गए थे।

यार रमन मैं याँह काम से आया पड़ा हूँ और तुम्हें अब मजाक सूझ रहा है। रविकांत इतना कहने पर रमन प्रकाशक के ऑफिस से बाहर निकल जाता है।

अब रमन तनु के घर की ओर चलता है। कही भागने दौड़ने वह गिरने के बाद तनु के घर पहुँच जाता है। वह हाँफ रहा था और पसीने से पूरी तरह भींगा हुआ था। और तनु के दरवाजे को जोर से खोलता है। घर में शादी जैसा माहौल चल रहा था।

हर कोई नाच रहे थे वह खुश हो रहे थे। माहौल देखकर ऐसा ही लग रहा था कि कल तनु की शादी हो सकती है। मगर तनु कहाँ है?

रमन तनु की मम्मी से यह बात पूछता है। तनु का भाई शायद रमन को पकढने करने के लिए आगे बढ़ता है। मगर उसका बाप उसे रोकता है। मुँह पर उंगली रखते हुए कहता है। सब कुछ वैसे ही चल रहा है जैसे चलना था। उसका बाप बताता है। तनु ऊपर छत पर बैठी है। तनु का भाई कुछ समझ नहीं पता है। रमन छत पर ओर के जाता है।

तनु, जो पहले हर बात में मजाक किया करती थी, अपनी जिंदगी को बहुत अच्छी तरह से जीने वाली आज छत के एक कोने पर बिल्कुल खामोशी से बैठी थी। अब वह पहले जैसी भी नहीं दिख रही थी। तनु अब काफी काली हो चुकी थी। उसका शरीर ऐसे हो गया था जैसे उसे किसी प्रकार की गंभीर बीमारी हो।

तनु... तनु...। तू जो अपने डिजाइन देने के लिए गई थी उसका क्या हुआ।

तनु रमन की ओर देखती हैं फिर अपना सिर घूम लेती है। और जो ठंडी ठंडी हवा बह रही थी उसका आनंद लेने लगती है।

रमन तनु से फिर वही सवाल पूछता है। तनु ने अपने हाथ की मुट्ठी बंद कर रखी होती है।

अबे तू पढ़ने भी नहीं आती है?

रमन उसे मासिक पत्रिका को तनु को दिखाते हुए कहता है।

यह देख तेरे कपडे का चित्र छापी है मगर तेरा नाम क्यों नहीं लिखा हुआ है।

तनु अब किसी मोह माया में नहीं थी वह सब कुछ छोड़ चुकी थी।

तभी पीछे से तनु का बाप आता है और रमन को नीचे उतरने के लिए कहता है।

रमन तनु के पिता के पास जाता है और उनसे तनु से बात करने के लिए और समय माँगने लगता है।

तभी तनु अपनी हथेली खोलती है। उसमें कुछ सफेद सा पाउडर होता है। और उसे अपने मुँह में भर लेती है।

रमन उसे हलचल को महसूस कर लेता है। और तनु के पास जाता है। वह तनु को गले लगा लेता है। वह उसे नहीं छोड़ता है। तभी पीठ पर कुछ गीला गीला महसूस होने लगता है। वह तनु को देखा है और तनु के मुँह से सफेद से झाग निकल रहा होता है। रमन उसे उठता है और सीढ़ी की ओर बढ़ता है। नीचे से रमन का भाई दौड़ता हुआ ऊपर आता है।

भैया लगता है इसने कुछ खा लिया है।

तभी तनु का बाप आकर तनु को देखने लगता है। तनु का भाई अपने पिता को पीछे हटाता है और तनु को देखता है। उसके आते ही तनु और जोर-जोर से तड़पने लगती है और रमन के हाथों में प्राण त्याग देती है। तनु का भाई पैरौं पकड़ के उस हिलाता है। रमन भी उसके सिर को हिलाता है। और फिर रमन उसकी छाती पर अपना सिर

रख उसकी धड़कानों को सुनने की कोशिश करता है। वो धड़कनें अभी शांत हो चुकी थीं। फिर धीरे-धीरे लोग उसके आसपास आने लगते हैं। तनु का भाई अपनी पिता को धक्के मार के सीढ़ियों से नीचे गिरा देता है। जैसे की इन सब में उसकी पिता की बहुत बड़ी साजिश हो। सबकी आँखों में आँसू होते हैं और उसका पिता भी सीढ़ियों के नीचे बैठ के रोने लगता है। रमन बिल्कुल खामोश हो चुका था उस नहीं समझ ए आ रहा था अभी क्या किया जाए। तनु तनु के चेहरे से एक प्यारी सी शानंति को महशुस किया जा सकता है। अब कोइ लोभ – लालच नहीं है अब मतलबी दुनिया से कुछ नहीं चाहिए।

रमन अपनी जगह से उठता है। ऑर कुछ समझने की कोसिस करता हैँ। फिर वो तनु के पापा क ऑर दौड़ता है। उसकी गर्दन पकड़ के कहता है। तनु के बुरे कर्मों के कारण वो तुम्हारे जैसे बाप को पायी थी। उसका बाप इतना सुनते ही रोने लगता है। ऑर फिर फिर किसी को कुछ कहे बिना और बोले बिना बस चलने लगता है। अभी उसके पास कुछ भी होश नहीं था। वाह सामने डूबते सूरज की आगे चलते जा रहा था। तनु निर्जीव जमीन पे पड़ी होती है। तनु का वो मासूम सा चहेरा कीसी से कुछ नहीं मांग रहा था । जैसे बो बस इतना ही जीना चाहती थी।।

6 महीने बाद

शहर में एक गाड़ी घूम रही होती है। यह गाड़ी पागल पकड़ाने वाली गाड़ी होती है। उसमें एक आदमी अपनी बीड़ी जला के पी रहा होता है और दूसरा आदमी गाड़ी चला रहा होता है।

बीड़ी पीने वाला व्यक्ति गाड़ी चलाने वाले व्यक्ति को दाएं मुड़ने के लिए काहता है। और अपनी बंदूक निकलता है। उस बंदूक में एक गोली होती है जिससे पागलों को बेहोश किया जाता था। उन्हें पकड़ाने के लिए। फिर वह गाड़ी कुछ दुर पर जाकर रुकती है। वह आदमी जो बीड़ी पी रहा होता है। अपनी बंदूक निकलता है और सीधे एक निशाना बनाता है।

ठायें.......

उस बंदूक की गोली सीधे एक आदमी पर जाकर लगती है।

वह लोग जल्दी से जब उसे एक पिंजरे में बंद करते हैं और गाड़ी में डाल देते हैं। और उस पागलखाने ले जाते हैं। पागलखाने में जब उसकी सफाई होती है उसके चेहरे पर बल हटाए जाते हैं तो वाह रमन होता है।

पागलखाने में दो लोग और होते हैं। जो रमन की हालात पे चिंता व्यक्त कर रहे होते हैं।

अभी बेटी राधा देखते हैं इसे कितने दिनों में होश आता है।

यह है शब्द रविकांत के होते हैं।

और रविकांत के साथ राधा भी खड़ी होती है।

राधा जो उस बाढ़ से बच चुकी थी। वह रविकांत के साथ खड़ी थी।

गणेश की दो रचनाओं का अंत इसे ही पता है। क्योंकि मैं पढ़ नहीं पा रही थी और गणेश ने उस अंत को लिख दिया था।

राधा इतना कहते ही पीछे मुड़ जाती है।

अंत तो इस लड़के का भी बहुत बुरा हुआ है। जब इसे होश आएगा और इसे पता चलेगा कि इसके माँ-बाप अभी नहीं रहे।